सामान्य अध्ययन

कला एवं संस्कृति

CSE पाठ्यक्रम के अनुरूप

Powered by

Sanskriti IAS

कला एवं संस्कृति

विषय-सूची

इकाई	टॉपिक	पृष्ठ संख्या
1	भारतीय संस्कृति : एक परिचय	3-16
2	भारतीय विरासत का संरक्षण	17-23
3	भारतीय स्थापत्य कला	24-59
4	मूर्तिकला	60-72
5	भारतीय चित्रकला	73-90
6	भारतीय नृत्यकलाएँ	91-108
7	भारतीय संगीत	109-121
8	भारतीय नाट्यकला	122-128
9	भारतीय पुतली कला	129-132
10	भारत की परंपरागत युद्धकलाएँ	133-135
11	भारतीय हस्तशिल्प	136-146
12	भारतीय भाषा एवं साहित्य	147-168
13	मेले एवं त्योहार	169-175
14	भारत में धर्म एवं दर्शन	176-201
15	भारत में कैलेंडर	202-205
16	भारत के सांस्कृतिक संस्थान	206-216

इकाई 1

भारतीय संस्कृति : एक परिचय (Indian Culture : An Introduction)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारतीय संस्कृति के आधारभूत पक्षों तथा इससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- संस्कृति का अर्थ
  - ➤ संस्कृति का नीतिशास्त्रीय अर्थ
  - ➤ संस्कृति का ऐतिहासिक अर्थ
  - ➤ संस्कृति का मानवशास्त्रीय अर्थ
  - ➤ संस्कृति की विशेषताएँ
- संस्कृति के प्रकार
  - ➤ भौतिक संस्कृति
  - ➤ अभौतिक संस्कृति
  - ➤ भौतिक व अभौतिक संस्कृति में अंतर
- संस्कृति के घटक
- सभ्यता और संस्कृति में तुलनात्मक अध्ययन
- संस्कृति एवं धर्म के बीच अंतर्संबंध
- भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ
  - ➤ पुरातनता
  - ➤ निरंतरता
  - ➤ सहिष्णुता
  - ➤ लचीलापन एवं समन्वयवादिता
  - ➤ ग्रहणशीलता
  - ➤ आध्यात्मिकता
  - ➤ सर्वांगीणता एवं सार्वभौमिकता
  - ➤ विभिन्नता में एकता
- भारतीय संस्कृति के समक्ष चुनौतियाँ
  - ➤ वर्ग-विभेद
  - ➤ क्षेत्रवाद
  - ➤ भाषावाद
  - ➤ संप्रदायवाद
  - ➤ उग्र-राष्ट्रवाद

भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रसार

- भूमिका
- भारतीय संस्कृति के प्रसार में सहायक तत्त्व
- दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति का प्रसार
  - ➤ श्रीलंका
  - ➤ बर्मा
  - ➤ वियतनाम
  - ➤ कंबोडिया
  - ➤ मलेशिया
  - ➤ थाईलैंड
  - ➤ इंडोनेशिया
- मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति का प्रसार
- पूर्वी एशियाई देशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार
  - ➤ चीन
  - ➤ तिब्बत
- विश्व के अन्य भागों में भारतीय संस्कृति का प्रसार
  - ➤ रोम
  - ➤ अरब

संस्कृति का अर्थ (Meaning of Culture)

- संस्कृति शब्द सम् उपसर्ग, कृ धातु और क्तिन् प्रत्यय से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है– वह कार्य जो भली प्रकार से किया गया हो तथा अलंकृत एवं विभूषित हो। इस प्रकार संस्कृति किसी अवस्था के परिष्कृत स्वरूप को प्रदर्शित करती है।
- जब कोई सभ्यता एक विशेष प्रकार के बौद्धिक उत्कर्ष को प्राप्त कर लेती है, तब वह साहित्य, दर्शन, कला, विज्ञान आदि सभी पक्षों में अलंकृत और परिष्कृत हो जाती है। सभ्यता का यही स्वरूप अपने विशिष्ट अर्थ में संस्कृति कहलाता है।
- अंग्रेज़ी में संस्कृति के लिए 'कल्चर' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जो लैटिन भाषा के 'कल्ट' या 'कल्टस' से लिया गया है। इस शब्द के विभिन्न अर्थों में से एक है– परिष्कार (Refinement) अर्थात् बौद्धिक विकास और उन्नति। इस प्रकार संस्कृति बौद्धिक विकास या आत्मिक प्रगति से संबंधित है।
- रेडफील्ड के अनुसार, "संस्कृति, कला और वास्तुकला में स्पष्ट होने वाले परंपरागत ज्ञान का वह संगठित स्वरूप है जो परंपरा द्वारा संरक्षित होकर मानव-समूह की विशेषता बन जाता है। ऐसी प्रत्येक जीवन-पद्धति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार, नवीन अनुसंधान जो मानव जीवन के स्तर में बदलाव लाता है तथा विचारों को पहले की अपेक्षा ऊँचा उठाता है, वह संस्कृति का ही अंग है।"

संस्कृति का नीतिशास्त्रीय अर्थ (Ethical Meaning of Culture)

नैतिक दृष्टि से संस्कृति का संबंध नैतिकता, सच्चाई, ईमानदारी, आदर्श नियमों एवं सद्गुणों से है। संस्कृति का संबंध 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' (The Truth, The God, The Beauty) से है। हीगल, काण्ट एवं लॉबेल आदि ने संस्कृति का नीतिशास्त्रीय अर्थ में प्रयोग किया है। इस अर्थ में संस्कृति का संबंध उन वस्तुओं से है जो मानव जीवन को आनंद प्रदान करती हैं, जो सुंदर हैं, जो ज्ञान से संबंधित हैं, जो सत्य हैं और जो मानव के लिए कल्याणकारी एवं मूल्यवान हैं। नीतिशास्त्र में संस्कृति शब्द का प्रयोग धार्मिक एवं नैतिक गुणों से युक्त आचरण के लिए किया जाता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

सिगिरिया शिलाकला, श्रीलंका

- श्रीलंका आगे चलकर बौद्ध धर्म का महत्त्वपूर्ण केंद्र बना। दीपवंश और महावंश को श्रीलंका के प्रमुख बौद्ध स्रोतों के रूप में माना जाता है। इसके अतिरिक्त, श्रीलंका में अनुराधापुर, महाविहार और अभयगिरी बौद्ध मठों को स्थापित किया गया।
- बौद्ध धर्म के साथ-साथ भारतीय कला का प्रसार भी श्रीलंका तक हुआ। श्रीलंका के सिगिरिया नामक गुफा से प्राप्त चित्रकलाओं के नमूने भारत की अमरावती की चित्रकला शैली से प्रभावित हैं। इसके अतिरिक्त, नौवीं सदी में चोल काल के दौरान उत्तरी श्रीलंका में हिंदू धर्म और तमिल भाषा का प्रसार हुआ।

बर्मा (Burma)

- ईस्वी सन् की आरंभिक सदियों में भारत से बौद्ध धर्म बर्मा तक पहुँचा। बर्मा में बौद्ध धर्म के थेरवाद रूप का विकास हुआ तथा बुद्ध से सम्बंधित मंदिरों, मठों और मूर्तियों का निर्माण करवाया गया।
- ग्यारहवीं सदी में बर्मा के शासक अनिरुद्ध, जो बौद्ध अनुयायी थे, ने अपनी राजधानी पेगन (अरिमर्दनपुर) में बौद्ध संस्कृति का प्रसार किया। यहाँ अनेक पगोडा और मठों का निर्माण करवाया गया। राजा अनिरुद्ध द्वारा निर्मित पगोडा में स्वेडगन पगोडा का निर्माण महत्त्वपूर्ण है।
- पेगन में स्थित आनंद मंदिर को स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। मंदिर के मध्य में बुद्ध की विशाल प्रतिमा स्थित है, साथ ही मंदिर की दीवारों पर जातक ग्रंथों से ली गई बुद्ध के जीवन से जुड़ी कथाओं का चित्रण किया गया है। इस मंदिर की संरचना भारतीय शैली से प्रभावित मानी जाती है।

वियतनाम (Vietnam)

- दक्षिणी वियतनाम का चंपा क्षेत्र भारतीय प्रभाव में था। चंपा पर भारतीय प्रभाव दूसरी सदी के अंत में स्थापित हुआ, जो कि बारहवीं सदी तक कायम रहा। भारतीय मूल के 11 राजवंशों ने चंपा पर शासन किया।
- ललित कला, नृत्य, संगीत, चित्रकारी, मूर्तिकला और हस्तशिल्प की प्रमुख विशेषताएँ भारत और वियतनाम के बीच परस्पर सांस्कृतिक संबंधों को स्पष्ट करती हैं।
- चंपा क्षेत्र के निवासियों को 'चाम' कहा जाता था, जो शिव, गणेश, लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती एवं लोकेश्वर की अराधना करते थे। यहाँ से लगभग 200 मंदिरों के अवशेष मिले हैं, जिनकी स्थापत्य कला भारत के मंदिरों से प्रेरित है। इनमें माइसन मंदिर अत्यधिक प्रसिद्ध है, जो कि भगवान शिव को समर्पित है।

कंबोडिया (Combodia)

- हिंद-चीन के राज्यों में सर्वाधिक प्राचीन राज्य कम्बुज या कंबोडिया था, जिसे चीनी साहित्यों में 'फूनन' कहा गया है। इस क्षेत्र में भारतीय संस्कृति के प्रसार का श्रेय कौंडिन्य नामक ब्राह्मण को जाता है।

अंकोरवाट मंदिर

- कम्बुज के प्रसिद्ध नगरों में अंकोरथोम विशेष महत्त्वपूर्ण है। इस नगर का निर्माण भारतीय शैली में किया गया है। नगर में अलंकृत एवं विशाल भवन, मंदिर और सरोवर का निर्माण करवाया गया।

स्वेडगन पगोडा, बर्मा

- बारहवीं सदी में सूर्यवर्मन द्वितीय कम्बुज का शक्तिशाली राजा बना, जिसने अंकोरवाट में प्रसिद्ध विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया। इस मंदिर को अंकोरवाट मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।
- इस मंदिर की स्थापत्य कला में चोल वास्तुकला की विशेषताओं के साथ स्थानीय शैली की विशिष्टता भी प्रदर्शित होती है। इस मंदिर की दीवारों पर रामायण की संपूर्ण कथा का अंकन मिलता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 2	भारतीय विरासत का संरक्षण (Conservation of Indian Heritage)

इकाई 2
भारतीय विरासत का संरक्षण
(Conservation of Indian Heritage)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारतीय विरासत का संरक्षण तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- विरासत के संरक्षण की आवश्यकता
- कानूनी या वैधानिक प्रावधान
- संवैधानिक प्रावधान
- सांस्कृतिक संस्थाएँ
- अन्य प्रयास
  - ➤ इसरो नक्शा और प्रबंधन योजना
  - ➤ भारतीय विरासत संस्थान
- विरासतों के संरक्षण हेतु किए गए अंतर्राष्ट्रीय प्रयास
  - ➤ अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ– आई.यू.सी.एन.
  - ➤ यूनेस्को
  - ➤ यूनेस्को द्वारा विश्व विरासतों का वर्गीकरण

परिचय (Introduction)

- देश के भीतर हमारे चारों ओर विद्यमान वे सभी वस्तुएँ जो हमें हमारे पूर्वजों से प्राप्त हुई हैं, विरासत कहलाती हैं।
- विरासत, किसी देश और उसके लोगों को एक अलग पहचान प्रदान करती है। कोई भी महान समाज या देश अपनी समृद्ध विरासत के आधार पर गौरव प्राप्त करता है।
- विरासत को सांस्कृतिक और प्राकृतिक दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। सांस्कृतिक विरासत के अंतर्गत रीति-रिवाज, धर्म, संस्कृति, भाषा, संगीत, नृत्य, भवन, अभिलेख, सिक्के, रहन-सहन, खान-पान आदि को शामिल किया जाता है, जबकि प्राकृतिक विरासत में पर्वत, भूमि, नदी, समुद्र, खनिज, वन्यजीव आदि सम्मिलित होते हैं।
- किसी भी देश के लिए उसकी विरासत अमूल्य होती है, इसीलिए अपनी इस अमूल्य विरासत के महत्त्व को समझते हुए इसे संरक्षित रखना आवश्यक होता है।

विरासत के संरक्षण की आवश्यकता (Need of Heritage Conservation)

- भारत एक जीवंत और विविध सांस्कृतिक परिदृश्य वाला, विशाल भूगोल और इतिहास से संबंधित देश है। देश की ऐतिहासिक उपलब्धियों को वास्तुकला और विरासत स्थलों में देखा जा सकता है।
- वैश्वीकरण एवं औद्योगिकीकरण के कारण होने वाले तीव्र परिवर्तनों और लोगों में इसके महत्त्व के प्रति जागरूकता के अभाव के कारण इसे सुरक्षित रख पाना वर्तमान में एक चुनौती बन गई है।
- इन विरासत स्थलों को शहरीकरण का जोखिम, आर्थिक विकास और अप्रत्याशित परिवर्तन के निहितार्थ का सामना करना पड़ता है।
- सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमारी विरासत हमारी राष्ट्रीय पहचान है। इस कारण से इसका संरक्षण करना अति महत्त्वपूर्ण है। ऐसी कई एजेंसियाँ हैं, जो इसके संरक्षण का कार्य करती हैं, किंतु इस कार्य को करने के लिए हम सभी की सहभागिता भी ज़रूरी है।
- विश्व धरोहर स्थलों, प्राचीन स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों का संरक्षण अपरिहार्य है, जो पर्यटन उद्योग के विकास के साथ-साथ आर्थिक विकास का एक प्रमुख स्रोत भी है।
- स्पष्ट है कि भारत की इस अद्वितीय विरासत को बचाए रखना हमारा कर्तव्य और अधिकार भी है।

कानूनी या वैधानिक प्रावधान (Legal or Statutory Provisions)

विभिन्न कानून	वर्ष	विभिन्न कानून	वर्ष
ट्रेज़र ट्रोव एक्ट	1878	पुरावस्तु एवं कला कोष अधिनियम	1972
प्राचीन स्मारक परिरक्षण अधिनियम	1904	पुरावस्तु एवं कला कोष नियम	1973
प्राचीन स्मारक एवं पुरातत्त्वीय स्थल अवशेष अधिनियम	1958	सार्वजनिक अभिलेख अधिनियम	1993
प्राचीन स्मारक एवं पुरातत्त्वीय स्थल अवशेष नियम	1959	सार्वजनिक अभिलेख नियम	1997

- ट्रेज़र ट्रोव एक्ट, 1878 खजाने एवं उसके मालिकाना हक से संबंधित है। यहाँ 'खज़ाना' का अर्थ ज़मीन या अन्य किसी भी चीज़ में छिपी हुई कोई भी मूल्यवान वस्तु से हैं, जिसकी कीमत 10 रुपए या उससे अधिक होती है।

हेड ऑफिस : 636, भू-तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-09
प्रयागराज केंद्र : महाराणा प्रताप चौराहा, स्टैनली रोड, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उ.प्र.
9555-124-124

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 3 — भारतीय स्थापत्य कला (Indian Architecture)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारतीय स्थापत्य कला तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय

प्राचीन भारत की स्थापत्य कला
- हड़प्पाई स्थापत्य कला
  - ➤ हड़प्पाकालीन स्थापत्य कला की विशेषताएँ
  - ➤ हड़प्पाई नगरीकरण की विरासत
  - ➤ हड़प्पा सभ्यता के कुछ महत्त्वपूर्ण स्थल और उनकी पुरातात्विक प्राप्तियाँ
- स्तूप स्थापत्य कला
  - ➤ स्तूप के प्रकार
  - ➤ स्तूप स्थापत्य कला का ऐतिहासिक विकास
  - ➤ प्रसिद्ध स्तूप
- चैत्य स्थापत्य कला
  - ➤ प्रसिद्ध चैत्य
- गुहा स्थापत्य कला
  - ➤ मौर्यकालीन गुहा स्थापत्य कला
  - ➤ गुप्त एवं गुप्तोत्तरकालीन गुहा स्थापत्य कला
- मंदिर स्थापत्य कला
  - ➤ मंदिर विकास के चरण
  - ➤ हिंदू मंदिर के आवश्यक घटक
  - ➤ मंदिर स्थापत्य शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन
  - ➤ नागर स्थापत्य कला
  - ➤ नागर स्थापत्य कला की उपशैलियाँ
  - ➤ द्रविड़ स्थापत्य कला
  - ➤ द्रविड़ स्थापत्य कला की उपशैलियाँ
  - ➤ वेसर स्थापत्य कला

मध्यकालीन भारत की स्थापत्य कला
- इंडो-इस्लामिक स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएँ
- दिल्ली सल्तनतकालीन स्थापत्य कला
  - ➤ मामलुक स्थापत्य कला
  - ➤ खिलजी स्थापत्य कला
  - ➤ तुगलक स्थापत्य कला
  - ➤ सैयद और लोदीकालीन स्थापत्य कला
  - ➤ प्रांतीय स्थापत्य कला
- मुगलकालीन स्थापत्य कला
  - ➤ बाबर एवं हुमायूँकालीन स्थापत्य कला
  - ➤ अकबरकालीन स्थापत्य कला
  - ➤ जहाँगीरकालीन स्थापत्य कला
  - ➤ शाहजहाँकालीन स्थापत्य कला
  - ➤ औरंगज़ेबकालीन स्थापत्य कला
  - ➤ प्रांतीय स्थापत्य कला

आधुनिक भारत की स्थापत्य कला
- आधुनिक स्थापत्य कला पर प्रभाव
  - ➤ पुर्तगाली प्रभाव
  - ➤ फ्राँसीसी प्रभाव
  - ➤ ब्रिटिश प्रभाव
- आधुनिक स्थापत्य कला की शैलियाँ
  - ➤ इंडो-गोथिक शैली
  - ➤ नव-रोमन शैली

स्तंभ स्थापत्य कला
- अशोककालीन स्तंभों और अक्खमनी स्तंभों का तुलनात्मक अध्ययन
- महत्त्वपूर्ण मौर्यकालीन स्तंभ

परिचय (Introduction)

- स्थापत्य कला से आशय किसी स्थान को मानव के रहने योग्य बनाने की कला से है। अंग्रेज़ी में इसे 'आर्किटेक्चर' कहते हैं। यह लैटिन शब्द टैक्टन से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ निर्माता होता है। भवनों के आकल्पन (डिज़ाइन), विन्यास एवं रचना की प्रक्रिया तथा उत्पाद स्थापत्य कला के अंतर्गत आते हैं। भवन निर्माण से संबंधित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी भी वास्तुकला/स्थापत्य कला के अंतर्गत आती है।
- भारतीय स्थापत्य कला की कहानी उत्तरोत्तर विकास की कहानी है। प्राचीन हड़प्पा घाटी से लेकर वर्तमान समय तक निरंतरता एवं परिवर्तनशीलता की अपनी अलग गाथा है। महान साम्राज्यों का उदय एवं विघटन, विदेशी शासकों का भारत के ऊपर आक्रमण एवं उनका भारतीय वातावरण में ढलना, विभिन्न क्षेत्रीय और विदेशी संस्कृतियों व शैलियों का संगम भारतीय वास्तुकला में परिलक्षित होता है।
- भारतीय स्थापत्य कला का वर्गीकरण प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारत के अंतर्गत किया जाता है, जिसे निम्नलिखित आधारों पर उपवर्गीकृत किया जाता है–

प्राचीन भारत की स्थापत्य कला (Architecture of Ancient India)

हड़प्पाकालीन स्थापत्य कला (Harappan Architecture)

- लगभग पाँच हज़ार वर्ष पहले सिंधु नदी के तट पर एक समृद्ध सभ्यता का आविर्भाव हुआ जो कि उत्तर-पश्चिमी भारत के एक बड़े भाग में फैली थी। इसे 'सिंधु घाटी सभ्यता' या 'हड़प्पा सभ्यता' के नाम से जाना जाता है।
- काल्पनिकता एवं कलात्मक संवेदनशीलता इसकी विशेषताएँ थीं। इस सभ्यता के प्रमुख स्थल नगर नियोजन के आरंभिक और सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक हैं।

Copyright @ Sanskriti IAS

- अकबर की मज़बूत, सख्त और साधारण इमारतों की तुलना में शाहजहाँ की इमारतें अत्यंत मनमोहकता, कोमलता और भव्यता लिए होती थी।
- अकबर द्वारा प्रयुक्त लाल बलुआ पत्थर पर साधारण जड़ाऊ काम के स्थान पर शाहजहाँ की इमारतों में संगमरमर के पत्थरों पर अलंकरण हेतु रंगीन पत्थरों से जड़ावट के कार्य (पित्रादुरा तकनीक) को अधिक निपुणता और बारीक नक्काशी के साथ किया गया।
- यह काल पच्चीकारी के कार्य और जालीदार दीवारों के निर्माण में अधिक नवीनता लाने के लिए जाना गया। जालियों में ज्यामितीय आकारों को तराशने के स्थान पर फूलों और पत्तियों के आकारों को तराश कर अलंकरण किया जाने लगा।
- इस काल के दौरान मेहराबों की चाप को अधिक पर्णिल (Foliated) बनाया जाने लगा, जिनमें नौ दंतकार नक्श होते थे।
- शाहजहाँकालीन स्थापत्य कला के अंतर्गत गुंबद ने अधिक फारसी रूप ले लिया। इस दौरान निर्मित गुंबद दोहरा, बाहर से फूला हुआ तथा पतली गर्दन वाला बनाया गया।
- शाहजहाँ ने इंडो-इस्लामिक स्थापत्य कला से प्रेरित होते हुए भवन निर्माण कार्य में बंगाली शैली की विशेषताओं को आत्मसात् किया। बंगाली शैली के मुड़े हुए कंगूरों अथवा छाजनयुक्त छत की विशेषता को मुगलकालीन स्थापत्य कला में अपनाया गया।
- शाहजहाँकालीन स्थापत्य कला के कुछ प्रमुख नमूनों में आगरा के किले के भीतर दिवान-ए-खास, दीवान-ए-आम और मोती मस्जिद का निर्माण संगमरमर से किया गया। दिल्ली में लाल किला और जामा मस्जिद का निर्माण लाल बलुआ पत्थर से किया गया।

लाल किला

- शाहजहाँ ने दिल्ली का सातवाँ नगर 'शाहजहाँनाबाद' बसाया तथा इसी नगर में लाल बलुआ पत्थर से निर्मित अनियमित अष्टाभुजाकार एक किले का निर्माण करवाया, जिसे लाल किला के नाम से जाना गया।
- लाल किला को चारों ओर से एक दीवार द्वारा घेरा गया है, जिसमें दो मुख्य द्वार हैं। पश्चिमी द्वार का नाम लाहौरी दरवाज़ा और दक्षिणी द्वार का नाम दिल्ली दरवाज़ा रखा गया।

दिल्ली का लाल किला

- इसमें प्रमुख निर्माण सामग्री के रूप में लाल बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया है। इस किले के भीतर प्रमुख भवनों में दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, रंग महल, हीरा महल, नौबतखाना इत्यादि प्रमुख हैं।
- लाल किले के भीतर दीवान-ए-आम और रंगमहल अन्य भवनों की तुलना में अधिक विशाल है। इन दोनों इमारतों की बनावट अधिक अलंकारपूर्ण है, जो स्थापत्य कला की दृष्टि से श्रेष्ठ है। ये दोनों भवन एक मंज़िला मंडप के समान हैं, जिनमें चौड़े छज्जों वाली मेहराबें निर्मित है, जो बंगाली शैली से प्रेरित है। इन इमारतों में गुलाबी अलंकरण के लिए पोस्ता और कुमुदनी आदि फूलों का प्रयोग किया गया है।
- दीवान-ए-खास एक ऊँचा, अलंकृत, स्तंभों वाला कक्ष है, जिसकी समतल भीतरी छत उत्कीर्ण मेहराबों पर टिकी हुई है। इसके स्तंभ भी पित्रादुरा से अंलकृत हैं, जबकि ऊपरी हिस्से पर (छत में अंदर की तरफ से) चांदी, सोने, बहुमूल्य पत्थरों तथा संगमरमर की मिश्रित सजावट की गई है।

ताजमहल

- मुगलकालीन इमारतों में ताजमहल एक अद्वितीय कृति है, जिसे आगरा में यमुना के तट पर संगमरमर से निर्मित किया गया था। इसे शाहजहाँ ने अपनी बेगम अर्जुमंद बानो (मुमताज महल) की याद में बनवाया था।

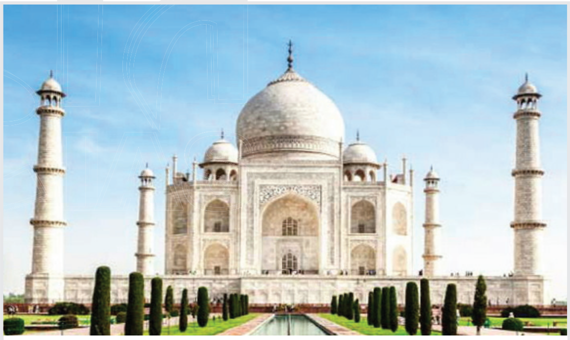

ताजमहल

- ताजमहल का निर्माण वर्गाकार चबूतरे पर किया गया है, जिसकी मुख्य इमारत के मध्य में एक फूला हुआ गुंबद और प्रत्येक कोने में एक छतरी को बनाया गया है। चबूतरे के प्रत्येक कोनों में तीन मंज़िला मीनार बनाई गई है, जिसके ऊपर छतरी है।
- मकबरे के भीतरी भाग का निर्माण हुमायूँ के मकबरे के समान अष्टकोणीय कक्ष के रूप में किया गया है।
- सफेद संगमरमर से निर्मित ताजमहल में पित्रादुरा शैली में सजावट की गई है, वहीं जालीकारी का भी काम किया गया है।
- इस इमारत में मध्य एशिया, ईरान और भारतीय वास्तुकला का सम्मिश्रण देखने को मिलता है। इसका डिज़ाइन अहमद लाहौरी ने बनाया था तथा निर्माण कार्य ईसा खाँ के निर्देशन में पूरा हुआ।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 4	मूर्तिकला (Sculpture Art)

इकाई 4 — मूर्तिकला
(Sculpture Art)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'मूर्तिकला तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- सिंधुकालीन मूर्तिकला
  - मृण्मूर्तियाँ
  - धातु मूर्तियाँ
  - प्रस्तर मूर्तियाँ
  - मृद्भांड
  - मुहरें
  - आभूषण
- मौर्यकालीन मूर्तिकला
- मौर्योत्तरकालीन मूर्तिकला
  - शुंगकालीन मूर्तिकला
  - सातवाहनकालीन मूर्तिकला
  - कुषाणकालीन मूर्तिकला
    - गांधार मूर्तिकला
    - मथुरा मूर्तिकला
- गुप्तकालीन मूर्तिकला
- गुप्तोत्तरकालीन मूर्तिकला
  - चालुक्य शैली
  - राष्ट्रकूट शैली
  - पाल शैली
  - पल्लव शैली
  - चोल शैली
  - होयसल शैली
  - ओडिशा शैली
  - खजुराहो शैली
  - विजयनगर शैली
  - नायक शैली
  - राजपूत शैली
  - दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय मूर्तिकला
- बुद्ध से संबंधित विभिन्न मुद्राएँ
- विभिन्न अवस्थाओं में मूर्तियाँ

परिचय (Introduction)

- भारत में मूर्तियों का निर्माण सिंधु घाटी सभ्यता से ही शुरू हो गया था, जो आधुनिक मूर्तिकला के विकास तक अनवरत जारी है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को जानने और समझने के संदर्भ में मूर्तिकला महत्त्वपूर्ण पुरातात्विक स्रोत है।
- प्राचीन भारत की मूर्तिकला से जनसाधारण के जीवन का सजीव चित्रण होता है। इन प्राचीन मूर्तियों से तत्कालीन धार्मिक जीवन से लेकर सामाजिक जीवन के बारे में पता चलता है।
- मूर्तिकला, कला की लघु रचना होती है, जो कि अपने स्वरूप में त्रिआयामी होती है। यह हस्तनिर्मित होने के साथ-साथ उपकरणों की सहायता से भी बनाई जाती है।
- मूर्तिकला में सौंदर्यशास्त्र के समावेशन हेतु रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को समाविष्ट किया जाता है।
- किसी भी मूर्ति को बनाने में सामान्यत: एक ही प्रकार की सामग्री का प्रयोग किया जाता है, जैसे– काँस्य मूर्ति, मृण्मूर्ति, प्रस्तर मूर्ति आदि।

सिंधुकालीन मूर्तिकला (Sculpture of Indus period)

मृण्मूर्तियाँ (Terracotta)

मिट्टी से निर्मित खिलौना

- मनुष्य ने सर्वप्रथम मूर्ति गढ़ने की कला की शुरुआत मिट्टी से की थी। सिंधु घाटी सभ्यता से हमें बड़ी संख्या में पक्की मिट्टी की मूर्तियाँ मिलती हैं। ये मूर्तियाँ आकार में सुडौल नहीं हैं। इनमें कुशलता का अभाव है।
- मृण्मूर्तियों के अंतर्गत खिलौने, पशुओं तथा मातृदेवी की मूर्तियाँ, गाड़ियाँ और पहिये आदि सम्मिलित किए जाते हैं। सबसे अधिक मृण्मूर्तियाँ पशु-पक्षियों की मिली हैं तथा स्त्री मृण्मूर्तियाँ पुरुषों की तुलना में अधिक मिली हैं। सिंधुकालीन मृण्मूर्तियों में मानव मूर्तियाँ ठोस हैं, जबकि पशु-पक्षियों की मूर्तियाँ प्राय: खोखली बनाई गई हैं।

मिट्टी से निर्मित खिलौना

- कूबड़ वाले बैल की तुलना में बिना कूबड़ वाले बैल की मृण्मूर्तियाँ अधिक संख्या में प्राप्त हुई हैं। गाय की मृण्मूर्ति प्राप्त नहीं हुई है। मोहनजोदड़ो से हिलते हुए सिर के पशु का खिलौना मिला है, जो कि मिट्टी से निर्मित है।
- इस खिलौने में पशु का सिर धागे की मदद से हिलता है। यह खिलौना स्पष्ट करता है कि बच्चों का मन ऐसे खिलौनों से किस प्रकार बहलाया जाता था।
- मातृदेवी की मूर्तियाँ हड़प्पा सभ्यता के कई स्थलों से प्राप्त हुई हैं। यहाँ से प्राप्त एक मूर्ति (चित्र में) के वक्षस्थल के उभार पर गले के आभूषण को देखा जा सकता है, जिसने पंखाकार मुकुट भी धारण कर रखा है। इस मृण्मूर्ति ने धोती या कटिवस्त्र पहन रखा है तथा करधनी भी धारण किया है।

Copyright @ Sanskriti IAS

भूमिस्पर्श मुद्रा

ध्यान मुद्रा

वितर्क मुद्रा

अभयमुद्रा

धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा

अंजलि मुद्रा

उत्तरबोधि मुद्रा

वरद मुद्रा

करण मुद्रा

वज्र मुद्रा

ललितासन में एक पैर पालथी की स्थिति में, जबकि दूसरे पैर का घुटना मुड़ा हुआ तथा बाई हथेली पर शरीर का बोझ होता है। मैत्रेयासन और विश्रामासन दोनों सिंहासन पर बनाए गए हैं।

- खड़ी मूर्तियों को स्थान कहा जाता है। इसके अंतर्गत भद्रासन, समभंग, अभंग, त्रिभंग, अतिभंग, शालभंजिका आदि अवस्थाओं में मूर्तियाँ होती हैं। भद्रासन और समभंग अवस्थाओं में मूर्ति सीधी खड़ी बनाई जाती है। अभंग अवस्था समभंग के समान होती है, लेकिन एक घुटना आगे की ओर मुड़ा होता है। त्रिभंग अवस्था में शरीर को तीन दिशाओं में बनाया जाता है। इसमें सिर एक दिशा में, वक्ष से कटि तक का भाग दूसरी दिशा में एवं कटि से नीचे का भाग अन्य दिशा में बनाया जाता है। अतिभंग अवस्था में कई प्रकार के अंग बनाए जाते हैं, जैसे– शिव की नटराज मूर्ति आदि। शालभंजिका अवस्था में त्रिभंगी मुद्रा में खड़ी स्त्री को एक हाथ से साल वृक्ष को पकड़े हुए दिखाया जाता है। यह मूर्ति बुद्ध के जन्म से संबंधित है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 5 — भारतीय चित्रकला (Indian Painting)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारतीय चित्रकला तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- भारतीय चित्रकला की विशेषताएँ
- भारतीय चित्रकला का सिद्धांत
- प्रागैतिहासिक चित्रकला
- हड़प्पाकालीन चित्रकला
- प्राचीनकालीन भित्ति चित्रकला
  - ➤ भित्ति चित्रकला की तकनीक
  - ➤ अजंता चित्रकला
  - ➤ बाघ चित्रकला
  - ➤ बादामी चित्रकला
  - ➤ सित्तनवासल चित्रकला
  - ➤ एलोरा चित्रकला
  - ➤ आर्मामलई चित्रकला
  - ➤ रावण छाया आश्रय चित्रकला
  - ➤ तंजौर चित्रकला
  - ➤ लेपाक्षी चित्रकला
  - ➤ जोगीमारा चित्रकला
- लघु चित्रकला
  - ➤ पाल लघु चित्रकला
  - ➤ पश्चिम भारतीय लघु चित्रकला
  - ➤ सल्तनतकालीन लघु चित्रकला
  - ➤ मुगलकालीन लघु चित्रकला
  - ➤ दक्कन लघु चित्रकला
- मध्य भारत और राजस्थानी चित्रकला
  - ➤ मालवा चित्रकला
  - ➤ मेवाड़ चित्रकला
  - ➤ बूंदी चित्रकला
  - ➤ कोटा चित्रकला
  - ➤ किशनगढ़ चित्रकला
  - ➤ बीकानेर चित्रकला
  - ➤ मारवाड़ चित्रकला
  - ➤ आमेर-जयपुर या ढूंढाड़ चित्रकला
  - ➤ मुगल एवं राजपूत चित्रकला में अंतर
- पहाड़ी चित्रकला
  - ➤ बसौली चित्रकला
  - ➤ गुलेर चित्रकला
  - ➤ काँगड़ा चित्रकला
  - ➤ कुल्लू-मंडी चित्रकला
- आधुनिक चित्रकला
  - ➤ कंपनी चित्रकला
  - ➤ बाज़ार चित्रकला
  - ➤ बंगाल चित्रकला
- लोक चित्रकला
  - ➤ कालीघाट चित्रकला
  - ➤ ओडिशा के पट्टचित्र
  - ➤ नाथद्वारा के पट्टचित्र
  - ➤ मधुबनी चित्रकला
  - ➤ वरली चित्रकला
  - ➤ कालमेजुथु चित्रकला
  - ➤ कोहवर और सोहरई चित्रकला
  - ➤ फड़ चित्रकला
  - ➤ गोंड चित्रकला
  - ➤ कलमकारी चित्रकला

परिचय (Preface)

- चित्रकला, कला के सर्वाधिक कोमल रूपों में से एक है जो रेखा और वर्ण के माध्यम से विचारों तथा भावों को अभिव्यक्ति देती है। प्रागैतिहासिक काल में जब मनुष्य मात्र गुफा में निवास करता था, तब उसने अपनी सौंदर्यपरक अति संवेदनशीलता और सृजनात्मक प्रेरणा को संतुष्ट करने के लिए शैलाश्रय चित्र बनाए।
- चित्रकला की परंपरा भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन काल से चली आ रही है। गौरतलब है कि भारतीय चित्रकला की सौंदर्यात्मकता की निरंतरता आज तक विद्यमान है।
- आरंभिक भारतीय चित्रकला के साक्ष्य हमें गुफाओं की दीवारों पर मिलते हैं। आगामी समय में ये नगरीय सभ्यता के उदय के साथ ही दैनिक जीवन में प्रयोग में लाए जा रहे उपकरणों पर भी मिलने लगे। इन उपकरणों के अंतर्गत बर्तनों, मृद्भांडों, वस्त्रों, भवनों, सिक्कों आदि पर की गई चित्रकारी विशिष्ट है।
- जैन एवं बौद्ध धर्म के उद्भव के साथ ही इस कला का विकसित रूप दिखता है। फिर मध्य काल में मुगल शासकों का चित्रकला के विकास में मुख्य योगदान रहा। उत्तर मुगलकाल के दौरान भी स्थानीय ज़मींदारों और छोटे राजाओं द्वारा चित्रकला का विकास होता रहा।
- औपनिवेशिक काल के दौरान पश्चिमी प्रभावों से भारतीय कला का एक नया दौर प्रारंभ हुआ। इसमें भारतीय चित्रकारों ने रंगों, शैलियों और बनावटों में नवीन प्रयोग किए तथा भारतीय चित्रकला को नई ऊँचाई प्रदान की।

भारतीय चित्रकला की विशेषताएँ (Characteristics of Indian Painting)

- भारतीय चित्रकला के विषय अपने आरंभिक काल में धर्म पर आधारित थे, जैसे– अजंता, बाघ की गुफाओं में भगवान बुद्ध, जबकि राजपूत चित्रकला में राधा-कृष्ण की चित्रकारी की गई है। हालाँकि, परवर्ती काल में जब धर्म का प्रभाव कम होने लगा तब चित्रों के विषय मनुष्य केंद्रित होने लगे।
- इस चित्रकला में यथार्थता के स्थान पर कल्पनाशीलता पर अधिक बल दिया गया है। विभिन्न चित्रकारों ने अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर देवी-देवताओं के चित्रों को अलग-अलग रूप देने का प्रयास किया।
- इस चित्रकला में प्राकृतिक दृश्यों का पर्याप्त चित्रण है, जैसे– वृक्षों, वनस्पतियों, पर्वतों, नदियों और पशु-पक्षियों का चित्रण आदि।

Copyright @ Sanskriti IAS

कोहबर और सोहरई चित्रकलाएँ (Kohwar and Sohrai Paintings)

कोहबर चित्रकला

सोहरई चित्रकला

- यह चित्रकलाएँ झारखंड की प्रमुख लोक कला हैं।
- दोनों चित्रकलाओं में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग होता है, जो पेड़ की छाल व मिट्टी (लाल, काला, पीला, सफेद रंग) से बनाए जाते हैं।
- संभवत: वर्तमान की कोहबर कला झारखंड के प्राचीन गुफाचित्रों का ही एक आधुनिक रूप है।
- यह चित्रण पूर्ण रूप से महिलाओं द्वारा किया गया है, जो बहुत ही कलात्मक, स्पष्ट और पठनीय होता है।
- इस चित्रकला के विषय सामान्यत: प्रजनन, स्त्री-पुरुष संबंध, जादू-टोना हैं।
- इसके अतिरिक्त, इस चित्रकला में शिव और मानव आकृतियों के विभिन्न रूपों का चित्रण भी किया जाता है।
- सोहरई पर्व, दीवाली के तुरंत बाद, फसलों की कटाई के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर आदिवासी अपने घर की दीवारों पर चित्र बनाते हैं।

फड़ चित्रकला (Phad Painting)

फड़ चित्रकला

- फड़ चित्रकला राजस्थान की एक प्रमुख लोक चित्रकला है। इस चित्रकला द्वारा महाकाव्यों के नायकों और देवताओं के जीवन-चरित्रों को लोक गीत-संगीत सहित प्रस्तुत किया जाता है।
- इस चित्रकला का चित्रण मुख्यतया कपड़ों पर किया जाता है। इसके अंतर्गत पाबूजी और देवनारायणजी की फड़ अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

गोंड चित्रकला (Gond Painting)

- गोंड चित्रकला को जनजातीय कला के रूप में जाना जाता है। भारत की सबसे बड़ी जनजातियों में से एक गोंड का संबंध इस चित्रकला से है।
- यह चित्रकला मुख्य रूप से मध्य प्रदेश से संबंधित है। इसके अतिरिक्त, यह आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में भी काफी प्रचलित है।

गोंड चित्रकला

- इसे परंपरागत रूप में मिट्टी की दीवारों पर चित्रित किया जाता है, जिसमें पहाड़ियों, नदियों, पशुओं और पक्षियों आदि का अंकन किया जाता है।
- इन चित्रों को अलंकारिक बनाने के लिए धारियों, छोटी-छोटी बिंदियों, ज्यामितीय आकृतियों का प्रयोग किया जाता है।
- इन चित्रों की विषयवस्तु में प्राकृतिक परिवेश या उनके दैनिक जीवन की घटनाएँ शामिल हैं।

कलमकारी चित्रकला (Kalamkari Painting)

- यह दक्षिण भारत के आंध्र प्रदेश में प्रचलित हस्त निर्मित चित्रकला है।
- इसमें चित्रकारी के लिए नुकीले नोक वाली बाँस की लेखनी का प्रयोग किया जाता है जो रंगों के प्रवाह को विनियमित करती है।

कलमकारी चित्रकला

- इस चित्रकला में चित्रों को सूती वस्त्र पर बनाया जाता है। इसमें वनस्पतियों से प्राप्त रंगों का प्रयोग किया जाता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 6

भारतीय नृत्यकलाएँ
(Indian Dance Arts)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारतीय नृत्यकलाएँ तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- पृष्ठभूमि
- नृत्य के स्वरूप
- भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ
  - ➤ भरतनाट्यम
  - ➤ कुचिपुड़ी
  - ➤ कथकली
  - ➤ मोहिनीअट्टम
  - ➤ ओडिसी
  - ➤ मणिपुरी
  - ➤ कथक
  - ➤ सत्रिय
- भारत के लोकनृत्य

पृष्ठभूमि (Background)

- नृत्य को सर्वाधिक चित्राकर्षक एवं माधुर्यपूर्ण निष्पादन कला की श्रेणी में रखा जाता है। प्राचीन काल से ही मनुष्य अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए शारीरिक अंगों की गति और भाव-भंगिमाओं का प्रयोग करते रहे हैं।
- भीमबेटका से प्राप्त सामुदायिक नृत्य संबंधी नक्काशियाँ तथा सिंधु घाटी सभ्यता के उत्खनन से प्राप्त नर्तकी की कांस्य प्रतिमा यह सिद्ध करती है कि प्रागैतिहासिक काल से ही नृत्यकला का प्रयोग होता रहा था। इसी प्रकार पौराणिक ग्रंथों एवं गाथाओं में तांडव नृत्य करते हुए नटराज शिव का भी वर्णन मिलता है।
- नृत्य का पहला औपचारिक वर्णन भरतमुनि की प्रसिद्ध कृति 'नाट्यशास्त्र' (200 ईसा पूर्व से 200 ईसवी) से मिलता है। इस कृति में भारतीय शास्त्रीय नृत्य के विभिन्न पहलुओं को वर्णित किया गया है। साथ ही, नृत्य से संबंधित तकनीकों, मुद्राओं, आभूषणों, मंचों एवं दर्शकों के बारे में भी विस्तृत वर्णन किया गया है।
- भरतमुनि नृत्य को पूर्ण कला की संज्ञा प्रदान करते हैं, जिसमें संगीत, शिल्पकला, काव्य एवं नाट्यकला समावेशित हैं। इनके नाट्यशास्त्र के अनुसार, भगवान ब्रह्मा ने चारों वेदों के कुछ पहलुओं को मिलाकर नाट्य वेद की रचना की। नाट्य वेद में ऋग्वेद से पथ्य (शब्द), यजुर्वेद से अभिनय (भंगिमाएँ), सामवेद से गीत (संगीत) तथा अथर्ववेद से रस (भाव) को समावेशित किया गया है।

नृत्य के स्वरूप (Forms of Dance)

- भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के अनुसार, भारतीय शास्त्रीय नृत्य के दो आधारभूत स्वरूप लास्य एवं तांडव हैं। नारी अभिमुखताओं के प्रतीक के रूप में नृत्यकला के स्वरूप में लास्य, लालित्य, भाव, रस एवं अभिनय को सम्मिलित किया जाता है। वहीं दूसरी तरफ पुरुष अभिमुखताओं (वीर, निर्भीक और ओजस्वी) के प्रतीक के रूप में नृत्यकला के स्वरूप में तांडव, लय तथा गति पर अधिक ध्यान दिया जाता है।
- पौराणिक गाथाओं में वर्णित शिव-पार्वती के नृत्य को ही क्रमशः तांडव एवं लास्य नृत्य कहा जाता है। उग्र व वीर तांडव नृत्य की प्रकृति है, जबकि सुकुमार और कोमल लास्य नृत्य की प्रकृति है, जो क्रमशः पुरुष और स्त्री के गुणों को स्थापित करते हैं।
- नंदिकेश्वर के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अभिनय दर्पण' में नृत्य के तीन आधारभूत स्वरूप नृत्त, नाट्य एवं नृत्य को बताया गया है। 'नृत्त' से तात्पर्य लयबद्ध रूप से किए जाने वाले पद संचालनों से है, जिनमें किसी अभिव्यक्ति या मनोदशा को सम्मिलित नहीं किया जाता है। 'नाट्य' के माध्यम से किसी विस्तृत कथा की प्रस्तुति की जाती है। 'नृत्य' का आशय रस एवं भावों को मूक अभिनय एवं मुद्राओं के माध्यम से प्रस्तुत करने से है।
- नंदिकेश्वर के अनुसार, नृत्य के माध्यम से नौ रसों एवं भावों की अभिव्यक्ति होती है। इन रसों एवं भावों को हाथ की भंगिमाओं एवं शरीर की विभिन्न मुद्राओं द्वारा व्यक्त किया जाता है। ये नौ रस इस प्रकार हैं–
  - ➤ प्रेम के लिए श्रृंगार रस
  - ➤ आश्चर्य के लिए अद्‌भुत रस
  - ➤ हास्य एवं विनोद के लिए हास्य रस
  - ➤ शौर्य के लिए वीर रस
  - ➤ क्रोध के लिए रौद्र रस
  - ➤ संत्रास के लिए भयानक रस
  - ➤ घृणा के लिए वीभत्स रस
  - ➤ दुखांत घटना के लिए करुणा रस
  - ➤ शांति के लिए शांत रस

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 7	# भारतीय संगीत (Indian Music)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारतीय संगीत तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- उत्पत्ति एवं विकास
- भारतीय संगीत रचना विज्ञान
  - स्वर
  - राग
  - ताल
  - थाट
  - रस
  - समय
  - अन्य घटक
- भारतीय संगीत शैली का वर्गीकरण
- शास्त्रीय संगीत
  - हिंदुस्तानी संगीत शैली
  - कर्नाटक संगीत शैली
  - हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत का तुलनात्मक अध्ययन
- घराना
- लोक संगीत
  - विभिन्न राज्यों के लोक संगीत
- शास्त्रीय और लोक संगीत का समागम
- आधुनिक संगीत
- कुछ प्रमुख संगीतकार
- कुछ प्रमुख वाद्ययंत्र
  - प्रमुख वाद्ययंत्र एवं उनसे संबंधित कलाकार

परिचय (Introduction)

वे प्राकृतिक ध्वनियाँ जिनमें लय हो संगीत के अंतर्गत आती हैं। संगीत की उत्पत्ति भावबद्ध ध्वनियों से होती है। वह ललित कला जिसके तहत स्वर और लय के माध्यम से भावों को प्रकट किया जाता है, 'संगीत' कहलाती है। दूसरे शब्दों में, स्वर, ताल, शुद्ध, आचरण और शुद्ध मुद्रा के गेय विषय ही संगीत है। वास्तव में, स्वर और लय ही संगीत का आधार है। गीत शब्द में 'सम्' उपसर्ग जोड़ने से संगीत शब्द बना है। 'सम्' अर्थात् 'सहित' और 'गीत' का अर्थ है 'गान'। अर्थात् नृत्य एवं वादन के साथ किया हुआ गान 'संगीत' कहलाता है। भारतीय संगीत की अवधारणा में अलग-अलग कलाओं के रूप में स्वीकृत गायन, वादन एवं नृत्य कलाओं के संयुक्त स्वरूप को संगीत की संज्ञा प्रदान की गई है।

उत्पत्ति एवं विकास (Origin and Development)

- भारतीय संगीत का आविर्भाव वैदिक काल (लगभग 2000 ईसा पूर्व) से माना जाता है। ऋग्वेद में आर्यों के मनोरंजन के प्रमुख साधन के रूप में संगीत का उल्लेख मिलता है। इस युग के प्रमुख ग्रंथ 'सामवेद' को भारतीय संगीत का मूल माना जाता है जिसमें उन वैदिक ऋचाओं का संग्रह है, जिनसे देवताओं की स्तुति की जाती थी। सामवेद में उच्चारण के आधार पर तीन प्रकार के – ग, रे और स (इन्हें सामिक भी कहा जाता है) तथा संगीत के आधार पर सात प्रकार के स्वरों का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त, दो भारतीय महाकाव्यों– रामायण और महाभारत की रचनाओं में भी संगीत का मुख्य प्रभाव दिखाई पड़ता है। साथ ही, तैत्तरीय उपनिषद, ऐतरेय उपनिषद, शतपथ ब्राह्मण, याज्ञवल्क्य-रत्न प्रदीपिका, प्रतिभाष्यप्रदीप इत्यादि ग्रंथों से भी हमें तत्कालीन संगीत के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।
- चौथी सदी में भरतमुनि द्वारा रचित 'नाट्यशास्त्र' संगीत कला के दृष्टिकोण से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इसके छह अध्यायों में विभिन्न वाद्ययंत्रों, उनकी उत्पत्ति, उन्हें बजाने के तरीकों आदि का स्वर, छंद, विभिन्न कालों के संदर्भ में विस्तृत वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त, इसमें छह रागों, यथा– भैरव, हिंडोल, कौशिक, दीपक, श्रीराग और मेघ का भी उल्लेख है।
- मतंगमुनि द्वारा रचित महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'वृहददेशी' से देशी राग नियमों के संदर्भ में उल्लेख मिलता है। पाणिनी के 'अष्टाध्यायी' में भी अनेक वाद्ययंत्रों जैसे– मृदंग, झर्झर, हुड़क तथा गायकों व नर्तकों संबंधी कई बातों का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त, नारद द्वारा रचित 'नारदीय शिक्षा' और 'संगीत मकरंद' तथा सारंगदेव द्वारा रचित 'संगीत रत्नाकर' इत्यादि संगीत के सुप्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

- सामाजिक जीवन में संगीत के आरंभिक प्रमाण हमें हड़प्पा सभ्यता में दृष्टिगोचर होते हैं, जहाँ से ढोल बजाती हुई व नृत्य मुद्राओं में कई मूर्तियाँ एवं सीलें प्राप्त हुई हैं। काँसे की नर्तकी की प्रसिद्ध मूर्ति को उदहारणस्वरूप देखा जा सकता है।
- प्राचीन काल से ही ईश्वर की स्तुति और यज्ञादि के लिए भजनों के गायन की परंपरा रही है। ध्यातव्य है कि प्राचीनकालीन अन्य कलाओं के समान ही भारतीय संगीत कला भी धार्मिक स्वरूप

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 8	भारतीय नाट्यकला (Indian Theatre)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारतीय नाट्यकला तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- भूमिका
- शास्त्रीय संस्कृत नाट्यकला
- लोक नाट्यकला
- आधुनिक भारत में नाट्यकला

भूमिका (Introduction)

- नाटक संस्कृत के 'नट' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है– 'नर्तक'। यह एक संपूर्ण विधा है, जिसमें अभिनय, संवाद, कविता, संगीत इत्यादि का एक साथ समायोजन होता है।
- भारत में इस कला का उद्भव यूनानी नाटकों से भी प्राचीन है। सीताबोंगा और जोगीमारा की गुफाएँ भारतीय नाट्यकला के प्राचीनतम साक्ष्य के रूप में हैं।
- भरतमुनि का 'नाट्यशास्त्र' इस कला का एक प्राचीन ग्रंथ है, जिसमें सुव्यवस्थित नाट्यकला का दर्शन होता है।
- प्राचीन भारतीय नाट्यकला को मुख्य रूप से दो शास्त्रीय संस्कृत और लोक नाट्यकलाओं में विभक्त किया जा सकता है। इनका विस्तृत विवरण इस प्रकार है–

शास्त्रीय संस्कृत नाट्यकला (Classical Sanskrit Theatre)

- इस नाट्यकला का मुख्य प्रयोजन पाठक या दर्शक का मनोरंजन करना होता था। विदित है कि इन नाटकों को काव्य या वर्णात्मक गद्य के रूप में संकलित किया गया है।
- भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र की प्रथम पुस्तक 'नाट्यशाला' में नृत्य संबंधी मुद्राओं और मंच संचालन के सभी नियम वर्णित है।
- विशाखदत्त कृत 'मुद्राराक्षस' एक प्रतिष्ठित राजनीतिक नाटक है, जिसमें राजा चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन से संबंधित घटनाओं का उल्लेख है। इसकी एक अन्य प्रसिद्ध रचना 'देवीचंद्रगुप्तम्' से गुप्तवंशीय शासक रामगुप्त के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।
- महान नाटककार कालिदास ने तीन नाटकों 'मालविकाग्निमित्रम्', 'विक्रमोर्वशीयम्' तथा 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' की रचना की है। 'मालविकाग्निमित्रम्' से शुंगकालीन राजनीतिक परिस्थितियों की जानकारी मिलती है। इस नाटक में शुंगवंशीय राजा अग्निमित्र और मालविका की प्रेम कथा का वर्णन है।
- 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' कालिदास की सर्वोत्कृष्ट रचना है, जिसमें प्रेम रस की अभिव्यक्ति अद्वितीय है। इसके अतिरिक्त, 'विक्रमोर्वशीयम्' में पुरुरवा और उर्वशी के प्रणय कथा का वर्णन है।
- 'मृच्छकटिकम्' एक असाधारण नाटक है, जिसकी रचना शूद्रक ने की थी। इस नाटक के पात्र समाज के सभी वर्गों से लिए गए है। इस नाटक में ब्राह्मण चारुदत्त और गणिका वसंतसेना की प्रेम कथा का वर्णन है।
- इसके अतिरिक्त, भास का प्रसिद्ध नाटक 'स्वप्नवासवदत्ता' संस्कृत रंगमंच के सर्वाधिक मंचनीय नाटकों में से एक है। इसमें कौशांबी के राजा उदयन और अवंतिराज की पुत्री वासवदत्ता के प्रेम प्रसंगों का वर्णन है।
- सातवीं सदी में कन्नौज के शासक यशोवर्मा के संरक्षण में एक अन्य महान नाटककार भवभूति ने महावीरचरित, उत्तररामचरित, मालतीमाधव आदि नाटकों की रचना की। 'महावीरचरित' में राम के जीवन की वीर रस प्रधान कथा और 'उत्तररामचरित' में रामायण के उत्तरार्द्ध को दर्शाया गया है। 'मालतीमाधव' में मालती और माधव प्रेम कथा का चित्रण किया गया है।
- इसके अतिरिक्त, अश्वघोष द्वारा रचित 'शारिपुत्र प्रकरण' एक नाटक ग्रंथ है, जिसमें शारिपुत्र के बौद्ध धर्म में दीक्षित होने की घटना का वर्णन है।
- गुर्जर-प्रतिहार वंश के राजा महेंद्रपाल और महिपाल की राज सभा में प्रसिद्ध कवि और नाटककार राजशेखर निवास करते थे। इन्होंने विद्धशालभंजिका, कर्पूरमंजरी, बाल रामायण और बाल भारत नाटकों की रचना की।

> **सभागार :** सभागार वह स्थान होता है, जहाँ दर्शक बैठकर नाटक का प्रेक्षण करते हैं।
>
> **मंच :** यह ऊँचा चबूतरेनुमा स्थान होता है, जिसके ऊपर नाटक का मंचन किया जाता है।
>
> **नेपथ्य :** मंच के पीछे का भाग है, जो पर्दे से ढका रहता है और जहाँ नाटक में भाग लेने वाले कलाकार तैयार होते हैं।

लोक नाट्यकला (Folk Theatre)

- भारतीय समाज में पारंपरिकता का विशेष स्थान है। पारंपरिक कलाएँ समाज की जिजीविषा, संकल्पना, भावना, संवेदना और ऐतिहासिकता को अभिव्यक्त करती हैं। इन कलाओं में लोक नाट्यकला का प्रमुख स्थान है।

Copyright @ Sanskriti IAS

भारत की लोक नाट्यकलाएँ	
लोकनाट्य एवं संबंधित राज्य	**प्रमुख विशेषताएँ**
रम्मन (उत्तराखंड) 	• यह नाटक नृत्य, गीत और रामायण की कथाओं के संवाद पर आधारित होता है। • इसमें स्थानीय देवता 'भुमियाली' की पूजा की जाती है। • इसका मंचन करते समय भगवान विष्णु की नरसिंह अवतार वाली मुखाकृति का मुखौटा पहना जाता है। • इसे 'भंडारी जनजाति' द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। • यह नाट्यकला यूनेस्को की 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' की सूची में शामिल है।
भवाई (गुजरात और राजस्थान) 	• यह नाट्यशैली मुख्यतया गुजरात के कच्छ-काठियावाड़ क्षेत्र में प्रचलित है। • इसमें भक्ति और प्रेम प्रसंगों (रूमानियत) का अद्भुत समन्वन देखने को मिलता है। • इसमें भुंगल, तबला, ढोलक, बाँसुरी, पखावज, रबाब, सारंगी, मँजीरा इत्यादि वाद्ययंत्रों का प्रयोग होता है। • इसमें कलाकारों द्वारा मिट्टी के बर्तनों या पीतल के घड़ों को सिर पर रखकर नृत्य किया जाता है।
नौटंकी (उत्तर प्रदेश) 	• इस लोकनाट्य की कानपुर, लखनऊ तथा हाथरस शैलियाँ प्रचलित हैं। • इसकी चर्चा अबुल फज़ल की रचना 'आईन-ए-अकबरी' में भी मिलती है। • पहले नौटंकी में पुरुष ही स्त्री पात्रों का अभिनय करते थे, परंतु अब स्त्रियाँ भी इसमें भाग लेने लगी हैं। • इसकी विषयवस्तु ऐतिहासिक, सामाजिक तथा लोककथाओं से संबंधित होती है, जिसे नृत्य और संगीत के माध्यम से नाटक के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।
तमाशा (महाराष्ट्र) 	• यह नाट्यकला हास्य रस तथा कामोत्तेजक सामग्रियों के लिए प्रसिद्ध है। • इसका प्रस्तुतीकरण मुख्य रूप से स्त्री कलाकारों के द्वारा होता है। इन कलाकारों को 'मुरकी' के नाम से जाना जाता है। • इसमें पुरुष पात्रों का अभिनय भी महिलाएँ करती हैं। • इसमें लावणी नृत्य के माध्यम से शास्त्रीय संगीत, वैद्युतिक गति के पदचाप तथा विविध मुद्राओं द्वारा सभी भावनाओं को प्रदर्शित किया जाता हैं।
भांड पाथेर (जम्मू और कश्मीर) 	• यह नृत्य, संगीत और नाट्यकला का अनूठा संगम है। • मूलतः भांड का संबंध कृषक वर्ग से है, इसलिए इस नाट्यकला में कृषि संवेदना का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। • इसकी विषयवस्तु समकालीन सामाजिक व्यंग्यों अथवा पौराणिक कथाओं पर आधारित होती है। • इसमें संगीत के लिए सुरनाई, नगाड़ा, ढोल इत्यादि का प्रयोग किया जाता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 9 भारतीय पुतली कला
(Indian Puppet Art)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारतीय पुतली कला तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- भारत में पुतली कला
  - सूत्र या धागा पुतली कला
  - छाया पुतली कला
  - दस्ताना पुतली कला
  - छड़ पुतली कला
- आधुनिक पुतली कला

परिचय (Introduction)

- प्राचीनकाल से पारंपरिक मनोरंजन में पुतली कला का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। पुतली शब्द लैटिन भाषा के 'प्यूपा' से लिया गया है, जिसका अर्थ 'पुतली' होता है। विदित है कि संस्कृत शब्दावली में पुतलीका तथा पुट्टीका का अर्थ 'छोटे पुत्रों' से है।
- पुतली कला का भारत में विकास 500 ईसा पूर्व से माना जाता है। इस कला का प्राचीनतम लिखित साक्ष्य पहली एवं दूसरी सदी ईसा पूर्व रचित तमिल ग्रंथ 'शिल्पादिकारम्' में पाया जाता है।
- दूसरी सदी ईसा पूर्व से दूसरी सदी ईसा के दौरान रचित ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में प्रत्यक्ष रूप से पुतली कला का उल्लेख नहीं है, लेकिन इसमें नाट्य के निर्माता-सह निर्देशक को 'सूत्रधार' के रूप में अवश्य वर्णित किया गया है। यहाँ सूत्रधार का अर्थ धागों से लगाया जाता है।
- भारत को पुतलियों का घर कहा जाता है। यहाँ लगभग सभी प्रकार की पुतलियाँ पाई जाती हैं। देश के विभिन्न प्रांतों को पुतलियों की अपनी विशेष पहचान के लिए जाना जाता है।
- इन पुतलियों में चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य और नाटक की क्षेत्रीय शैलियों की रचनात्मक अनुभूतियों का समावेश होता है।
- पारंपरिक नाट्यकला के समान पुतली कला की विषयवस्तु भी महाकाव्यों, पौराणिक साहित्यों, दंतकथाओं और किंवदंतियों पर आधारित हैं।
- इस कला को प्रस्तुत करने के लिए एक-साथ अनेक लोगों के सृजनात्मक प्रयासों की आवश्यकता पड़ती है।
- आधुनिक समय में विश्व के शिक्षाविदों ने पुतलियों के महत्त्व को समझा है। अनेक व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा शैक्षणिक संकल्पनाओं के संप्रेषण में पुतलियों का प्रयोग किया जा रहा है।

भारत में पुतली कला (Puppet Art in India)

सूत्र या धागा पुतली कला (String or Thread Puppet Art)

- भारत में धागा पुतलियों की परंपरा अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है।
- ये लकड़ी को तराशकर बनाई गई 8 से 9 इंच की लघु मूर्तियाँ होती हैं।
- इन्हें रंगीन वस्त्रों से ढका जाता है। साथ ही, इन्हें आकर्षक बनाने के लिए आभूषणों और अन्य सामग्रियों का भी प्रयोग किया जाता है।

सूत्र या धागा पुतली कला

- पुतलियों को गतिशीलता प्रदान करने के लिए इनके हाथ, सिर और पीठ में सुराख कर इन्हें धागे से जोड़ दिया जाता है। इसके पश्चात् इन्हें धागों द्वारा संचालित किया जाता है।
- इस प्रकार, अनेक जोड़युक्त अंग तथा धागों द्वारा संचालन इन्हें अत्यंत लचीलापन प्रदान करते हैं।
- राजस्थान, ओडिशा, कर्नाटक और तमिलनाडु में यह पुतली कला मुख्य रूप से पल्लवित एवं विकसित हुई। जहाँ इन्हें क्रमशः कठपुतली, कुनढ़ेई, गोंबेयेट्टा और बोम्मालट्टा के नाम से जाना जाता है।

छाया पुतली कला (Shadow Puppet Art)

- भारत के विभिन्न प्रांतों में छाया पुतलियों की अनेक शैलियाँ प्रचलित हैं।
- ये पुतलियाँ चपटी होती हैं और प्रायः चमड़े से बनाई जाती हैं।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 10

भारत की परंपरागत युद्धकलाएँ
(Traditional Martial Arts in India)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत की परंपरागत युद्धकलाएँ तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- कलारिपयाट्टू
- सिलांबम
- कुट्टू वरिसाई
- थांग-टा
- सरित-सरक
- मर्दानी खेल
- लाठी खेल
- थोडा
- इंबुआन कुश्ती
- मुष्टि युद्ध
- काठी सामु
- गतका
- चेइबी गद-गा
- परी-खंडा
- सकय
- पाईका अखाड़ा

परिचय (Introduction)

- मार्शल आर्ट का शाब्दिक अर्थ 'युद्ध छेड़ने से संबद्ध कला' है। इस कला का उद्देश्य हमला करने के स्थान पर स्वयं का बचाव करना होता है।
- यह समर्पण, साहस और आंतरिक शांति के साथ प्रदर्शित की जाने वाली एक कला है। यह एक व्यक्ति के ताकत से अधिक अनुशासन और संतुलन को प्रस्तुत करता है।
- इन कलाओं में सिद्धहस्त और पारंगत होने के लिए नियमित अभ्यास और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इसे विज्ञान और कला दोनों माना जाता है। इसे निश्चित नियमों के कारण विज्ञान तथा कौशल की अभिव्यक्ति के कारण कला माना जाता है।
- प्राचीन काल से भारत में प्रचलित इन कलाओं का प्रयोग युद्धों के दौरान किया जाता था, जिनका वर्तमान में उपयोग शारीरिक स्वास्थ्य लाभ, आत्मरक्षा तथा धार्मिक संस्कार के रूप में होने लगा।
- भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति के तहत देश के विभिन्न हिस्सों में विविध प्रकार के यद्ध कलाओं का अभ्यास किया जाता है। पारंपरिक कुश्ती सबसे लोकप्रिय और सर्वव्यापी मार्शल आर्ट है। इसके अतिरिक्त, देश के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न प्रकार की युद्ध कलाएँ प्रचलित है।
- ब्रिटिश काल में इन युद्ध कलाओं में से कुछ प्रमुख रूपों पर प्रतिबंध लगा दिया गया, जिसमें कलारिपयाट्टू और सिलांबम प्रमुख है।
- स्वतंत्रता के पश्चात् देश के विभिन्न भागों में प्रचलित इन युद्ध कलाओं को पुनर्जीवित करनेतथा संरक्षण प्रदान करने का कार्य किया जा रहा है।
- यद्यपि चीनी और जापानी मार्शल आर्ट विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। वहीं दूसरी तरफ भारतीय मार्शल आर्ट धीरे-धीरे लोकप्रिय हो रहे हैं, हालाँकि इन्हें अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। देश में प्रचलित विभिन्न युद्ध कलाओं का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है-

कलारिपयाट्टू (Kalaripayattu)

- 'कलारि' शब्द का आशय उस स्थान से है जहाँ इस युद्ध शैली को सिखाया जाता है, जबकि 'पयाट्टू' से तात्पर्य अभ्यास करना है।
- यह दुनिया के सबसे प्राचीन युद्ध कलाओं में से एक है। इसका अभ्यास मुख्य रूप से केरल में किया जाता है।

- यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायता करता है।
- इस युद्ध कला के प्रशिक्षण को मुख्य रूप से तीन चरणों मेयथारी, कोल्थारी और अंकथारी में विभाजित किया जाता है।
- कलारिपयाट्टू सीखने कापहला चरण मेयथारी है। इसमें शारीरिक व्यायामों की श्रेणी बद्ध शृंखला शामिल होती है।
- विभिन्न प्रकार के लकड़ी के हथियारों का उपयोग करने में सक्षम बनाने के चरण को कोल्थारी कहा जाता है।
- कलारिपयाट्टू का तीसरा चरण अंकथारी है। इसमें धातु के हथियार जैसे- तलवार, भाला, लचीली तलवार आदि का उपयोग करना और हमलों से बचाव के तरीकें सिखाए जाते हैं।
- वेरुमकाई अर्थात्बिना हथियारों के लड़ाई भी इस युद्ध कला में सिखाई जाती है।

सिलांबम (Silambam)

- सिलम शब्द का अर्थ 'पहाड़ी' होता है और बम शब्द एक विशेष प्रकार के 'बाँस' के लिए प्रयुक्त होता है।
- यह तमिलनाडु और पुदुचेरी में प्रचलित एक आधुनिक और वैज्ञानिक युद्ध कला है।
- यह विशेष प्रकार से लाठी चलाने की एक कला है।
- यह युद्धकला केरल के कलारिपयाट्टू के समान है।
- इस युद्ध कला का प्रदर्शन पोंगल त्योहारों के दौरान किया जाता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 11

भारतीय हस्तशिल्प (Indian Handicrafts)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारतीय हस्तशिल्प तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- काँच निर्मित हस्तशिल्प
- हाथीदांत पर हस्तशिल्प
- टेराकोटा हस्तशिल्प
- धातु हस्तशिल्प
- कपड़े पर हस्तशिल्प
- कढ़ाई कला
- बुनाई कला
- भूमि पर निर्मित कलाएँ

परिचय (Introduction)

- हस्तशिल्प से अभिप्राय हस्त कौशल से निर्मित किए गए रचनात्मक उत्पादों से हैं जिनके लिए किसी आधुनिक मशीनरी और उपकरणों की सहायता नहीं ली जाती है।
- भारत की भव्य सांस्कृतिक विरासत और सदियों से क्रमिक रूप से विकासित हो रही परंपराओं की झलक देश-भर में निर्मित हस्तशिल्पों के अंतर्गत दिखाई देती है।
- विदित है कि प्राचीन काल में इन हस्तशिल्प उत्पादों को रेशम मार्ग से यूरोप, अफ्रीका और पश्चिम एशिया के देशों को निर्यात किया जाता था।
- भारतीय हस्तशिल्प को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों– लोक शिल्प, आध्यात्मिक शिल्प, वाणिज्यिक शिल्प में विभक्त किया जा सकता है।
- भारत के कुछ प्रमुख हस्तशिल्प उत्पाद इस प्रकार है–

काँच निर्मित हस्तशिल्प (Glass Handicrafts)

- काँच से निर्मित मनकों का प्राचीनतम साक्ष्य गंगा घाटी के चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति (1000 ई.पू.) से प्राप्त हुआ है।
- दक्षिण भारत के ताम्रपाषाणिक स्थल मास्की से भी काँच के पुरातात्विक साक्ष्य मिले हैं।

काँच निर्मित हस्तकला

- मध्यकाल में मुगल शासकों द्वारा काँच का उपयोग विभिन्न भवनों के अलंकरण में किया गया। इसके अलावा, काँच से निर्मित कलाकृतियों में हुक्का, इत्रदान आदि प्रमुख रूप से शामिल है।
- वर्तमान में, हैदराबाद शहर अपनी उत्तम किस्म की चूड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद शहर को काँच से बनी चूड़ियों के अतिरिक्त झूमर और अन्य सजावटी सामानों के लिए भी जाना जाता है।
- इसके अलावा, उत्तर प्रदेश के सहारनपुर को 'पंचकोरा या काँच के खिलौनों' और वाराणसी को आलंकारिक काँच को मनकों (टिकुली) के लिए जाना जाता है।

हाथीदाँत पर हस्तशिल्प (Ivory Handicrafts)

- हाथीदाँत की वस्तुएँ देश के विभिन्न भागों में बनाई जाती है।
- हाथीदाँत से बनी वस्तुओं के पुरातात्विक अवशेष हड़प्पा काल से प्राप्त हुए हैं।
- हाथीदाँत से बनी चूड़ियों के लिए जोधपुर (राजस्थान) प्रसिद्ध है।
- केरल को हाथीदाँत पर नक्काशी कार्य के लिए जाना जाता है।

टेराकोटा हस्तशिल्प (Terracotta Handicrafts)

- टेराकोटा का आशय 'पकी मिट्टी' से बने शिल्प से है।
- हड़प्पा काल में बड़ी संख्या में मृण्मूर्तियों, मृद्भांडों का निर्माण किया गया था।

टेराकोटा हस्तशिल्प, लोक भवन, लखनऊ

- पश्चिम बंगाल के बांकुरा ज़िले में पंचमुरा गाँव को विशेष टेराकोटा शिल्प के लिए जाना जाता है। इन्हें 'बांकुरा अश्व' कहा जाता है।
- सिरेमिक उत्पादों के लिए उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर ज़िले के खुर्जा शहर को विशेष प्रसिद्धि प्राप्त है। साथ ही, 'ब्लू पॉटरी' के लिए जयपुर शहर की विशेष पहचान है।

बांकुरा अश्व

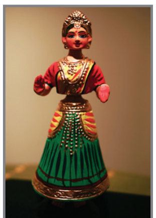

तंजावुर गुड़िया

- बिहार के मिथिलांचल की 'समा चकेवा' की मूर्तिकला, राजस्थान के राजसमंद ज़िले में 'मोलेला' की मूर्तिकला, तंजावुर की मिट्टी से निर्मित गुड़िया आदि कुछ प्रमुख टेराकोटा हस्तशिल्प के उदाहरण है।

Copyright @ Sanskriti IAS

भारत में बुनाई कला एवं संबंधित राज्य	प्रमुख विशेषताएँ
वांगखेई फे (मणिपुर) 	• इस पारंपरिक बुनाई कला को अत्यधिक महीन सफेद सूती धागे से बुना जाता है। • यह एक पारदर्शी कपड़ा होता है।
शाफी लांफी (मणिपुर) 	• यह भी मणिपुर राज्य की पारंपरिक बुनाई कला है। • इस वस्त्र को बुनने का कार्य मुख्यत: मेइती महिलाओं द्वारा किया जाता है।

भूमि पर निर्मित कलाएँ (Land Arts)

- भूमि पर बनाई जाने वाली कलाओं को मुख्य रूप से धार्मिक त्योहारों और पारिवारिक समारोहों में बनाया जाता है।
- इन कलाओं को बनाने के लिए प्राकृतिक पदार्थों और रंगों का प्रयोग किया जाता है, जिससे भूमि पर किसी प्रकार के निशान नहीं पड़ते। इस प्रकार इन कलाओं का उद्देश्य इन्हें स्थायी रूप से बनाए रखना नहीं होता है।
- भूमि पर इन डिज़ाइनों को मुक्त हस्त से बनाया जाता है। केंद्र में एक बिंदु से शुरू करते हुए वृत्त, वर्ग, त्रिभुज आदि विभिन्न आकृतियों में इन कलाओं को उकेरा जाता है।
- सामान्य रूप से रंगोली के नाम से चर्चित यह कला विभिन्न राज्यों में अलग-अलग नामों से जानी जाती है, जो इस प्रकार है-

भूमि पर निर्मित कलाएँ एवं संबंधित राज्य	प्रमुख विशेषताएँ
चौकपूरना (पंजाब और उत्तर प्रदेश) 	• इसमें वृत्त, वर्ग, त्रिभुज आदि ज्यामितीय आकृतियाँ निर्मित की जाती हैं। • इसमें स्वास्तिक, कमल, मछली, शंख, देवी लक्ष्मी के पैरों के निशान आदि का अंकन किया जाता है।
ऐपन (उत्तराखंड) 	• यह कला उत्तराखंड राज्य के कुमायूँ क्षेत्र से संबंधित है। • इस कला के चित्रण में लाल पृष्ठभूमि पर चावल के आटे से बने सफेद पेस्ट का प्रयोग किया जाता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 12	भारतीय भाषा एवं साहित्य (Indian Language and Literature)

भारतीय भाषा एवं साहित्य
(Indian Language and Literature)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारतीय भाषा एवं साहित्य तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- शास्त्रीय भाषाएँ
- भारत की प्राचीन लिपियाँ

भारतीय साहित्य

प्राचीन भारतीय साहित्य

- वैदिक साहित्य
  - ➤ वेद
  - ➤ ब्राह्मण
  - ➤ आरण्यक
  - ➤ उपनिषद्
  - ➤ वेदांग
  - ➤ सूत्र साहित्य
  - ➤ पुराण एवं उपपुराण
  - ➤ धर्मशास्त्र
- महाकाव्य
  - ➤ रामायण
  - ➤ महाभारत
- शास्त्रीय संस्कृत साहित्य
- पालि और प्राकृत में साहित्य
- द्रविड़ साहित्य
  - ➤ तमिल साहित्य
  - ➤ तेलगू साहित्य
  - ➤ मलयालम साहित्य
  - ➤ कन्नड़ साहित्य

मध्यकालीन साहित्य

- फारसी साहित्य
- उर्दू साहित्य
- हिंदी साहित्य
- बांग्ला साहित्य
- मराठी साहित्य
- पंजाबी साहित्य

आधुनिक साहित्य

- हिंदी साहित्य
- बंगाली साहित्य

परिचय (Introduction)

- भाषा मनुष्यों के बीच आपसी संप्रेषण का माध्यम है अर्थात् यह वाणी के माध्यम से संचार करने की एक प्रणाली है। यह ध्वनियों का ऐसा संग्रह होता है, जिसमें मनुष्यों का एक समूह एकसमान अर्थ ग्रहण करता है।
- मनुष्य ने सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के साथ ही अपनी भाषा का विकास किया, इसी के आधार पर लेखन शैली का भी सृजन हुआ है। लेखन शैली का आरंभ होने से संस्कृति, जीवनशैली तथा तत्कालीन समाज की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति का वर्णन करने के लिए लेखन कार्य किया जाने लगा।
- सीमित क्षेत्र में स्थानीय व्यवहार में प्रयोग होने वाली भाषा का वह अल्पविकसित रूप जिसका कोई लिखित रूप अथवा साहित्य नहीं होता, बोली कही जाती है। बोली भाषा का प्रारंभिक रूप होती है। एक ही भाषा अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार से बोली जा सकती है। उदाहरणस्वरूप- हिंदी भाषा उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा आदि क्षेत्रों में विभिन्न स्वरूपों में बोली जाती है।

शास्त्रीय भाषाएँ (Classical Language)

- भारत सरकार ने वर्ष 2004 में शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान करने के लिए कुछ निश्चित मानदंडों का निर्धारण किया, जो इस प्रकार हैं–
  - ➤ भाषा का लिखित इतिहास 1500-2000 वर्षों से अधिक पुराना होना चाहिए।
  - ➤ भाषा की मौलिक साहित्यिक परंपरा होनी चाहिए।
  - ➤ भाषा में रचित साहित्य/ग्रंथ को किसी समूह विशेष की पीढ़ियों द्वारा अमूल्य विरासत समझा जाना चाहिए।
- सरकार द्वारा तमिल, संस्कृत, तेलुगू कन्नड़, मलयालम तथा ओडिया को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है, जिसका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है–

शास्त्रीय भाषाएँ

- तमिल (2004)
- संस्कृत (2005)
- तेलुगू (2008)
- कन्नड़ (2008)
- मलयालम (2013)
- ओडिया (2014)
- मराठी (2024)
- पाली (2024)
- प्राकृत (2024)
- असमिया (2024)
- बंगाली (2024)

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 13

मेले एवं त्योहार
(Fairs and Festivals)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'मेले एवं त्योहार तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- राष्ट्रीय पर्व
- धार्मिक त्योहार
- लोक पर्व
  - ➤ उत्तर भारत के पर्व
  - ➤ दक्षिण भारत के पर्व
  - ➤ पूर्वोत्तर भारत के पर्व
- सांस्कृतिक महोत्सव

परिचय (Introduction)

- भारत में विभिन्न समुदायों और धर्मों के लोग परस्पर प्रेम और भाईचारे के साथ निवास करते हैं। इन विभिन्न धर्मों से संबंधित लोगों के विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक और पारंपरिक त्योहार आपसी सौहार्द एवं सामाजिक सद्‌भावना के साथ मनाए जाते हैं। ये मेले एवं त्योहार आस्था और धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के विभिन्न रूपों की प्रस्तुति करते हैं।
- भारत में मेले एवं त्योहार देश की संस्कृति और प्राचीन परंपराओं का जीवंत प्रतिनिधित्व करते हैं। देश में मनाए जाने वाले प्रत्येक मेले एवं त्योहार को अनुष्ठानों, परंपराओं, किंवदंतिमों तथा इतिहास के आधार पर एक विशिष्ट पहचान भी मिली हुई है।
- भारत में मनाए जाने वाले मेलों एवं त्योहारों से विभिन्न समुदायों की जीवनशैली और संस्कृति की जानकारी प्राप्त होती है। इन समारोहों से देश की व्यापक विविधता, जैसे- कला एवं संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन आदि के बारे में भी पता चलता है।
- भारत में आयोजित होने वाले विभिन्न त्योहारों के माध्यम से प्रकृति के साथ सामंजस्य और जुड़ाव को देखा जा सकता है। ये त्योहार पर्यावरण संरक्षण के आदर्श को जीवन में अपनाने की प्रेरणा देते हैं।
- भारत में मनाए जाने वाले विभिन्न उत्सवों को राष्ट्रीय, धार्मिक और लोक आयोजनों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

राष्ट्रीय पर्व (National Festivals)

- 26 जनवरी को देशभर में गणतंत्र दिवस का पर्व मनाया जाता है। 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ था, जिसके उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस पर्व मनाया जाता है। विदित है कि गणतंत्र दिवस पर दिल्ली के राजपथ पर एक भव्य परेड का आयोजन होता है, जिसमें देश की सांस्कृतिक विविधता और सैन्य सामर्थ्य का प्रदर्शन किया जाता है।
- 15 अगस्त, 1947 के दिन भारत को ब्रिटिश आधिपत्य से स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। अत: प्रतिवर्ष यह दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में सँजोए रखने और उनका पालन करने के उद्देश्य से यह पर्व मनाया जाता है।
- महात्मा गांधी के जन्मदिवस 2 अक्तूबर को गांधी जयंती के रूप में पूरे देश में मनाया जाता है। अहिंसा के आदर्शों पर आगे बढ़ते हुए देश की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने में अपनी केंद्रीय भूमिका निभाने के कारण महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता के रूप में याद किया जाता है। विदित है कि वर्ष 2007 में संयुक्त राष्ट्र ने गांधी जयंती (2 अक्तूबर) को प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाए जाने की घोषणा की थी।

धार्मिक त्योहार (Religious Festivals)

- हिंदू धर्म से संबंधित त्योहारों में मकर संक्रांति, बसंत पंचमी, महाशिवरात्रि, होली, हनुमान जयंती, नागपंचमी, रक्षाबंधन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी, दशहरा, धनतेरस, दीपावली, भाई दूज, गणेश चतुर्थी, शरद पूर्णिमा आदि प्रमुख है।
- मुस्लिम धर्म (इस्लाम धर्म) से संबंधित त्योहारों में ईद-उल-फितर, ईद-उल-जुहा, मिलाद-उन-नबी, मुहर्रम, शब-ए-बारात आदि को सम्मिलित किया जाता है।
- ईसाई धर्म से जुड़े प्रमुख त्योहार क्रिसमस, ईस्टर, गुड फ्राइडे आदि हैं।
- गुरु नानक जयंती, गुरु गोविंद सिंह जयंती, बैसाखी आदि सिख धर्म से संबंधित कुछ प्रमुख त्योहार हैं।
- जैन धर्म से जुड़े त्योहारों में पर्युषण, महावीर जयंती, दशलक्षण, दीपमालिका आदि का आयोजन किया जाता है।
- बौद्ध धर्म से संबंधित त्योहारों में बुद्ध पूर्णिमा या बुद्ध जयंती को मनाया जाता है।
- पारसी धर्म से संबंधित त्योहारों में जमशेदी नौरोज, खोरदाद साल, गहंबर आदि, जबकि यहूदी धर्म से संबंधित त्योहारों में पासोवर, पूरीम, शबात आदि मनाए जाते हैं।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 14 भारत में धर्म एवं दर्शन (Religion and Philosophy in India)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत में धर्म एवं दर्शन तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

भारतीय धर्म
- पृष्ठभूमि
- सिंधु-घाटी सभ्यता में धर्म
- सनातन/हिंदू धर्म
- वैदिक धर्म
- हिंदू धर्म के प्रमुख मत
- वैष्णव परंपरा के प्रमुख संप्रदाय
- शैव धर्म के प्रमुख संप्रदाय
- दक्षिण भारत में शैव संप्रदाय
- शाक्त या शक्ति संप्रदाय
- अन्य हिंदू परंपराएँ
- आधुनिक काल में हिंदू धर्म के पुनरुत्थान के लिए चलाए गए आंदोलन
- बौद्ध धर्म
- जैन धर्म
- इस्लाम
- ईसाई धर्म
- पारसी धर्म
- यहूदी धर्म
- सिख धर्म
- भक्ति एवं सूफी आंदोलन

भारतीय दर्शन
- भूमिका
- रूढ़िवादी विचारधारा
  - ➤ सांख्य दर्शन
  - ➤ योग दर्शन
  - ➤ न्याय दर्शन
  - ➤ वैशेषिक दर्शन
  - ➤ मीमांसा दर्शन
  - ➤ वेदांत दर्शन
- धर्म-विरोधी विचारधारा
  - ➤ चार्वाक/लोकायत दर्शन

भारतीय धर्म (Indian Religion)

पृष्ठभूमि (Background)

- भारतीय उपमहाद्वीप को धर्मों का पालना (Craddle of Religions) कहा गया है। सांस्कृतिक तथा भौगोलिक विविधता ने भारत में न सिर्फ प्रचलित विचारधाराओं और परंपराओं के खंडन का अवसर प्रदान किया, बल्कि नए धर्मों और मतों को फलने-फूलने का भी पर्याप्त अवसर दिया।
- प्राचीन भारत में धार्मिक कट्टरता और उन्माद का स्वरूप वर्तमान युग जैसा न था, अप्रासंगिक विचारधाराओं को उचित तर्कों द्वारा खंडित किया जा सकता था। शासकों द्वारा धर्म विशेष को प्रश्रय देने के बावजूद धार्मिक अत्याचार के उदाहरण कम ही मिलते हैं। छठी सदी ईसा पूर्व में श्रमण आंदोलन के फलस्वरूप कई नए मतों का जन्म हुआ, तथा जैन और बौद्ध अलग धर्म के रूप में उभरकर सामने आए।
- इस्लाम के आगमन के कारण भारतीय धर्मों के समक्ष अस्तित्व बचाए रखने का संकट उत्पन्न हो गया। यह संक्रमण का दौर था, जिसमें एक तरफ बलपूर्वक धर्म परिवर्तन कराए जा रहे थे, वहीं दूसरी तरफ भक्ति और सूफी आंदोलनों ने सामाजिक समरसता कायम करने के प्रयास किए। इन्हीं सब के बीच गुरुनानक देव ने वैयक्तिक समानता पर आधारित सिख धर्म की स्थापना की।
- भारत में यूरोपियों के आगमन के साथ ईसाई मिशनरियों ने धर्म परिवर्तन का कार्य शुरू कर दिया। इन्होंने भारतीय धर्म एवं संस्कृति को निम्नतर दिखाने का भी प्रयास किया। भारतीय संस्कृति में व्याप्त बुराइयों को दूर करने और इसकी श्रेष्ठता को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए कई आंदोलन चलाए गए, जिनमें ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन प्रमुख हैं।

सिंधु-घाटी सभ्यता में धर्म (Religion in Indus valley Civilization)

- सिंधु-घाटी सभ्यता अपने उन्नत नगरीकरण और व्यापार के लिए जानी जाती है। इस सभ्यता के धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन के बारे में उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर इनकी धार्मिक विशेषताओं को निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है।
- सिंधु-घाटी सभ्यता के लोग मुख्य रूप से मातृदेवी की पूजा करते थे, इसके सभी स्थलों से मातृदेवी की मूर्तियाँ बड़ी संख्या में पाई गई हैं। एक प्रतिमा, जिसमें एक महिला के भ्रूण से वृक्ष का जन्म हो रहा है, संभवतः पृथ्वी की देवी को इंगित करती है।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर पर योगी का चित्र अंकित है। जिसके तीन मुख हैं तथा योगी की मुद्रा में बैठा है। इसके समीप चार पशु गैंडा, भैंसा, हाथी एवं बाघ तथा सिंहासन के नीचे दो मृग दर्शाए गए हैं। इसे भगवान शिव का आद्यरूप (पशुपति शिव) माना जाता है।
- सिंधु-घाटी सभ्यता में लिंग पूजा प्रचलन में थी, लगभग सभी स्थलों से लिंग और योनि की आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं।

Copyright @ Sanskriti IAS

शंकराचार्य (Shankaracharya)

- हिंदू धर्म के पुनरुत्थान में शंकराचार्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इनके द्वारा 'विशुद्ध अद्वैतवाद मत' का प्रवर्तन किया गया। गौरतलब है कि इन्हें 'प्रच्छन्न बौद्ध' भी कहा जाता है।
- इनका जन्म केरल के 'कालिंदी' नामक स्थल पर हुआ था।
- इनकी अद्वैतवाद की यह अवधारणा 'निर्गुणब्रह्म' पर आधारित है।
- इनके द्वारा चारों दिशाओं (पूरब में 'गोवर्धन मठ, जगन्नाथपुरी', पश्चिम में 'शारदा मठ, द्वारका', उत्तर में 'ज्योतिर्पीठ, बद्रीकाश्रम', और दक्षिण में 'वेदांत मठ, श्रृंगेरी') में चार मठों को स्थापित किया गया है।

वल्लभाचार्य (Vallabhacharya)

- वल्लभाचार्य 'शुद्धाद्वैतवाद' मत के प्रतिपादक और कृष्ण-भक्ति संप्रदाय से संबंधित थे।
- इनके द्वारा प्रवर्तित दर्शन 'पुष्टिमार्ग' के नाम से जाना जाता है। इनकी प्रमुख रचनाओं में 'सुबोधिनी' और 'सिद्धांत रहस्य' शामिल हैं।
- इनका जन्म दक्षिण भारत के उड़पी में हुआ। इन्होंने विष्णु की उपासना व ज्ञान प्राप्ति पर बल दिया।
- माधवाचार्य ने द्वैतवाद दर्शन का प्रतिपादन किया इनके अनुसार ईश्वर व जीव अलग-अलग है।
- इन्होंने द्वैत दर्शन को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया।
- वे ब्रह्म संप्रदाय के संस्थापक थे और ब्रह्मांड और ब्राह्मणों को समान मानते थे।
- उनका मानना था कि पदार्थ, आत्मा और ईश्वर सभी अलग-अलग हैं। विष्णु द्वैतवादी ईश्वर थे जो दुनिया की हर चीज के प्रभारी थे।

माधवाचार्य (Madhvacharya)

- इनका जन्म दक्षिण भारत के उडपी में हुआ। इन्होंने विष्णु की उपासना व ज्ञान प्राप्ति पर बल दिया।
- माधवाचार्य ने द्वैतवाद दर्शन का प्रतिपादन किया। इनके अनुसार ईश्वर व जीव अलग-अलग हैं।
- इन्होंने द्वैत दर्शन को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया।
- वे ब्रह्म संप्रदाय के संस्थापक थे व ब्रह्मांड और ब्राह्मणों को समान मानते थे।
- उनका मानना था कि पदार्थ, आत्मा और ईश्वर सभी अलग-अलग हैं। विष्णु द्वैतवादी ईश्वर थे जो दुनिया की हर चीज के प्रभारी थे।

निंबार्काचार्य (Nimbarkacharya)

- इनका जन्म बारहवीं सदी में हुआ था। ये रामानुज के समकालीन थे।
- यह कृष्ण भक्त और 'द्वैताद्वैत' दर्शन के प्रवर्तक थे। द्वैताद्वैत का अर्थ है, द्वैत और अद्वैत दोनों अर्थात् यह संसार ब्रह्मा से भिन्न भी है और अभिन्न भी।
- इनका संप्रदाय सनक संप्रदाय के नाम से जाना जाता है।

शंकरदेव (Shankardev)

- शंकरदेव का संबंध असम से है। ध्यातव्य है कि असम में वैष्णव संप्रदाय को लोकप्रिय बनाने में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इन्हें कई सांस्कृतिक विधाओं को प्रारम्भ करने का श्रेय भी दिया जाता है। ये वैष्णव संप्रदाय के अनुयायी और श्रीकृष्ण के उपासक थे।
- इनके उपदेश भगवतगीता एवं भागवत पुराण पर आधारित थे। अत: इनके उपदेशों को भगवती धर्म कहकर संबोधित किया जाता है। इन्होंने कीर्तन एवं सत्संग पर बल दिया। इनकी सर्वप्रमुख काव्य रचना कीर्तन घोष है।

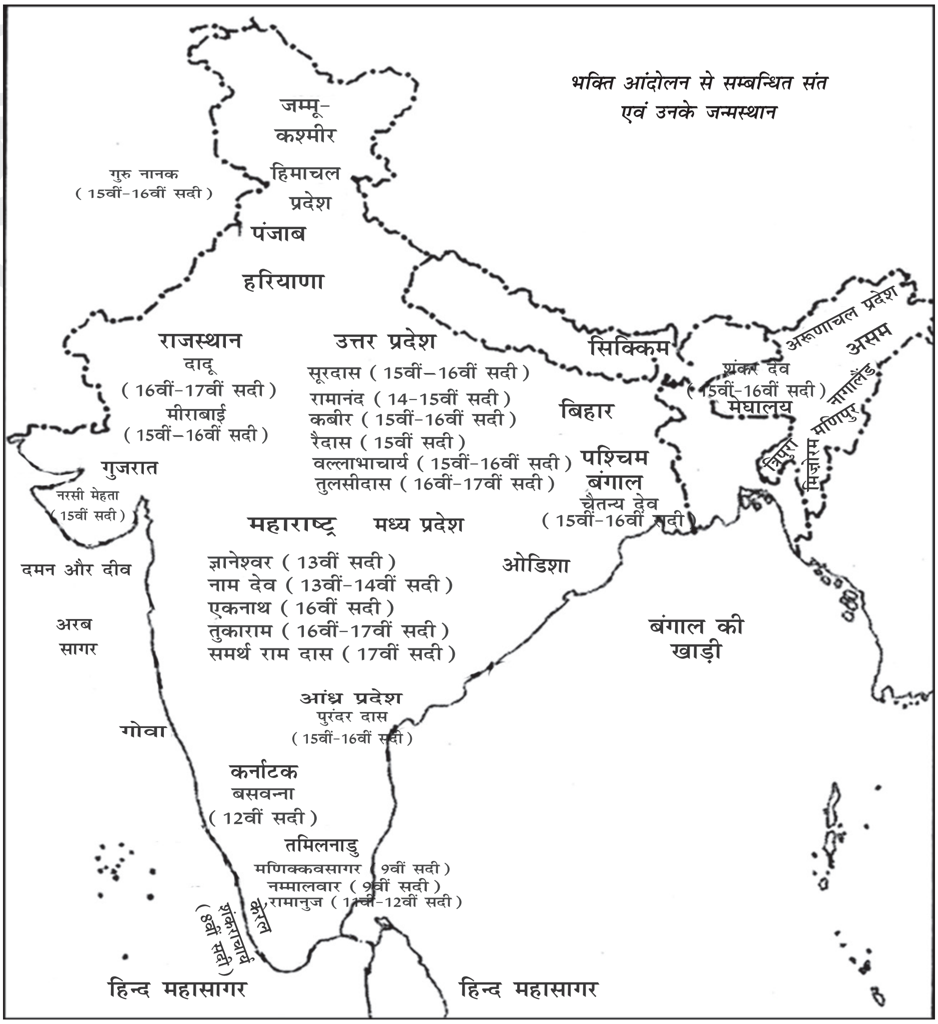

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 15

भारत में कैलेंडर
(Calendar in India)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत में कैलेंडर और उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- कैलेंडर निर्माण हेतु महत्त्वपूर्ण संकल्पनाएँ
  - भूमध्यरेखा या विषुवत रेखा
  - विषुव
  - अयनांत
- कैलेंडर के निर्माण हेतु अपनाई गई पद्धतियाँ
  - सौर पद्धति
  - चंद्र पद्धति
  - चंद्र-सौर पद्धति
- हिंदू पंचांग में प्रयुक्त विविध माह
- हिंदू पंचाग में प्रयुक्त पक्ष एवं तिथि (दिवस)
- हिंदू पंचांग
  - तिथि
  - वार
  - करण
  - नक्षत्र
  - योग
- विभिन्न युगों में निर्मित भारतीय कैलेंडर
  - विक्रम संवत्
  - शक संवत्
  - हिजरी कैलेंडर
  - ग्रेगोरियन कैलेंडर
- भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर

परिचय (Introduction)

- मानव समाज के विभिन्न कार्यों और गतिविधियों के बेहतर संचालन हेतु ऋतुओं में चक्रीय परिवर्तन का हिसाब-किताब रखने की आवश्यकता महसूस की गई। इस संदर्भ में एक ऐसी प्रणाली का जन्म हुआ, जिसे 'कैलेंडर' के नाम से जाना गया।
- ऋतुओं में होने वाले इस चक्रीय परिवर्तन का ज्ञान मनुष्य के कृषि संबंधी कार्यों के बेहतर क्रियान्वयन के लिए अत्यावश्यक था। साथ ही, धार्मिक, व्यापारिक-वाणिज्यिक, प्रशासनिक तथा दैनिक कार्यों के लिए भी समय का हिसाब-किताब रखा जाना आवश्यक हो गया था।
- इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विश्व की विभिन्न सभ्यताओं में समय-समय पर कैलेंडर का विकास किया गया। विदित है कि ये कैलेंडर सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी की गतियों को आधार बनाकर निर्मित किए गए।

कैलेंडर निर्माण हेतु महत्त्वपूर्ण संकल्पनाएँ (Important Concepts for Calendar Creation)

भूमध्यरेखा या विषुवत रेखा (Equator)

- भूमध्यरेखा वह काल्पनिक रेखा है, जो पृथ्वी की सतह पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों से एकसमान दूरी पर स्थित होती है। यह रेखा पृथ्वी को उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्धों में विभक्त करती है।
- भूमध्यरेखा पर वर्ष-भर दिन-रात की अवधि बराबर होती है। इस रेखा के 23½° उत्तर और दक्षिण में क्रमशः कर्क रेखा और मकर रेखा अवस्थित है।
- पृथ्वी अपने अक्ष पर 23½° झुकी होती है, जिसके कारण ही सूर्य की किरणें कर्क रेखा से मकर रेखा तक एवं पुनः मकर रेखा से कर्क रेखा तक चलती हुई प्रतीत होती हैं। इसके आधार पर ऋतु परिवर्तन की घटना घटित होती है।

विषुव (Equinox)

- वर्ष में दो बार सूर्य भूमध्यरेखा पर लंबवत चमकता है, यह स्थिति विषुव कहलाती है। इस स्थिति में पृथ्वी के दोनों गोलार्द्धों पर दिन-रात की अवधि बराबर होती है।
- विषुव की ये दो स्थितियाँ 21 मार्च और 23 सितंबर को बनती हैं, जब सूर्य विषुवत रेखा पर लंबवत चमकता है। 21 मार्च को बसंत विषुव और 23 सितंबर को शरद विषुव कहा जाता है।

अयनांत (Solstice)

- पृथ्वी अपने अक्ष पर 23½° झुकी होती है तथा दीर्घवृत्ताकार कक्षा में सूर्य का परिक्रमण करती है। परिणामस्वरुप सूर्य की किरणें कर्क रेखा से मकर रेखा तक एवं पुनः मकर रेखा से कर्क रेखा तक चलती हुई प्रतीत होती हैं।
- 21 जून को जब सूर्य कर्क रेखा (23½° उत्तरी अक्षांश) पर लंबवत चमकता है, तब इस स्थिति को ग्रीष्म अयनांत या ग्रीष्म संक्रांति कहते हैं। इस समय उत्तरी गोलार्द्ध में ग्रीष्म ऋतु और दक्षिणी गोलार्द्ध में शीत ऋतु होती है।
- इसके विपरीत, 22 दिसंबर को जब सूर्य मकर रेखा (23½° दक्षिणी अक्षांश) पर लंबवत् चमकता है, तब इस स्थिति को शीत अयनांत या मकर संक्रांति कहते हैं। इस समय दक्षिणी गोलार्द्ध में ग्रीष्म ऋतु और उत्तरी गोलार्द्ध में शीत ऋतु होती है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 16	भारत के सांस्कृतिक संस्थान (Cultural Institutions of India)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत के सांस्कृतिक संस्थान तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
- भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण
- भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्
- नेहरू मेमोरियल संग्रहालय एवं पुस्तकालय
- भारतीय शिल्प परिषद्
- भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय
- सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र
- भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत ट्रस्ट
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र
- क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र
- ऑल इंडिया रेडियो
- दूरदर्शन
- भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार
- राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन
- कलाक्षेत्र फाउंडेशन
- संगीत नाटक अकादमी
- साहित्य अकादमी
- ललित कला अकादमी
- राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
- फिल्म समारोह निदेशालय
- भारत भवन
- एशियाटिक सोसायटी
- भारतीय संग्रहालय, कोलकाता
- केंद्रीय सचिवालय पुस्तकालय
- राष्ट्रीय संग्रहालय
- राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय
- राष्ट्रीय पुस्तक न्यास
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

परिचय (Introduction)

- भारतीय संविधान में राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों में राष्ट्रीय महत्त्व के संस्मारकों, स्थानों और वस्तुओं के संरक्षण हेतु उचित प्रावधान किए जाने के संदर्भ में राज्य को निर्देश दिया गया है।
- संविधान में वर्णित मूल कर्त्तव्यों के अंतर्गत देश के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझते हुए उसका परिरक्षण करे।
- संविधान में उल्लेखित इन्हीं आदर्शों के आधार पर भारत में कई ऐसे संस्थानों की स्थापना की गई, जिनके माध्यम से भारतीय संस्कृति का पुनरुद्धार करने का कार्य किया जा रहा है। कुछ प्रमुख सांस्कृतिक संस्थानों का विवरण इस प्रकार है–

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India)

- संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण' राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासतों के पुरातत्त्वीय अनुसंधान और संरक्षण हेतु एक प्रमुख संगठन है। इसकी स्थापना वर्ष 1861 में अलेक्ज़ेंडर कनिंघम द्वारा की गई थी। कनिंघम ही इस संस्थान के प्रथम महानिदेशक भी थे।
- इस संस्थान का प्रमुख कार्य राष्ट्रीय महत्त्व के प्राचीन स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों में संचित भौतिक और मूर्त विरासत का उचित रखरखाव करना है।
- प्राचीन संस्मारक, पुरातत्त्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 के प्रावधानों के अनुसार, यह संस्थान देश की सभी पुरातत्त्वीय गतिविधियों को विनियमित करता है। इसके अतिरिक्त, पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972 द्वारा भी यह संस्थान पुरातत्त्व सर्वेक्षण का विनियमन करता है।
- ध्यातव्य है कि राष्ट्रीय महत्त्व के प्राचीन स्मारकों तथा पुरातात्विक स्थलों और अवशेषों के रख-रखाव के लिए पूरे देश को कुल-37 में विभाजित किया गया है। ये मंडल अपने-अपने अधिकार क्षेत्र में स्थित स्मारकों का परिरक्षण और संरक्षण करते हैं।

Copyright @ Sanskriti IAS

संस्कृति IAS

जहाँ एक नहीं, हर शिक्षक है श्रेष्ठ

देश में हिंदी माध्यम से
सामान्य अध्ययन की सर्वश्रेष्ठ टीम

सामान्य अध्ययन

फाउंडेशन कोर्स (प्रिलिम्स + मेन्स)

प्रत्येक माह नया बैच आरंभ

हाइब्रिड कोर्स
ऑफलाइन + ऑनलाइन

SPECIAL OFFER
9555 124 124

दिल्ली एवं प्रयागराज

इतिहास वैकल्पिक विषय
द्वारा- श्री अखिल मूर्ति

वैकल्पिक विषय
कार्यक्रम विशेषताएँ
- इतिहास और भूगोल में मानचित्र द्वारा अध्ययन के लिए वैज्ञानिक प्रविधि का प्रयोग
- क्लास के तुरंत बाद प्रत्येक विद्यार्थी की विषय संबंधी शंकाओं का निवारण
- प्रत्येक विद्यार्थी की पर्सनल मेंटरिंग व टेस्ट का मूल्यांकन फैकल्टी द्वारा
- मुख्य परीक्षा में पूछे गए विगत 25 वर्षों के प्रश्नों का उत्तर लेखन अभ्यास

भूगोल वैकल्पिक विषय
द्वारा- श्री कुमार गौरव

GS EXTENSIVE COURSE Prelims + Mains
- लगभग 650 कक्षाओं का एक्स्टेंसिव स्टडी प्रोग्राम
- AI द्वारा समर्थित अध्यापन प्रविधि का प्रयोग
- प्रत्येक टॉपिक का बेसिक से एडवांस लेवल तक कवरेज

INDIVIDUAL MENTORING
- शॉर्ट नोट्स और सिनॉप्सिस बनाने का प्रशिक्षण
- उत्तर लेखन में सुधार के लिए पर्सनल गाइडेंस
- स्टडी इम्प्रूवमेंट के लिए वन-टू-वन सेशन

PGP PRELIMS GUIDANCE Programme
- प्रत्येक टॉपिक के लिए महत्त्वपूर्ण करेंट अफेयर्स सिनॉप्सिस
- विगत 13 वर्षों के PYQs में पैटर्न के अनुरूप संपूर्ण पाठ्यक्रम का रिवीज़न

MMP MAINS MENTORSHIP Programme
- संस्कृति IAS की कोर फैकल्टी द्वारा Daily पर्सनल मेंटरिंग की सुविधा
- चारों प्रश्नपत्रों पर आधारित 70 टेस्ट का Intensive Test Programme

IGP INTERVIEW GUIDANCE Programme
- एक्सपर्ट के साथ वन-टू-वन सेशन
- DAF एनालिसिस एक्सपर्ट के साथ सीधा संवाद
- इंटरव्यू पैनल द्वारा मॉक इंटरव्यू सेशन्स

CSAT COURSE
- गणित और रीज़निंग का बेसिक से एडवांस लेवल तक Step-by-Step अध्यापन
- कॉम्प्रिहेंशन के प्रश्नों को सटीक और त्वरित ढंग से हल करने के लिए डायनमिक मेथडलॉजी

NCERT COURSE
- प्रत्येक विषय की कक्षा 6 से 12 तक की NCERT पर कक्षानुसार लैक्चर
- NCERT पर आधारित प्रिलिम्स और मेन्स के प्रश्नों पर चर्चा

QAD PROGRAMME
- GS के सभी टॉपिक्स के विगत वर्षों के PYQs पर विस्तृत प्रश्नोत्तर चर्चा
- प्रिलिम्स परीक्षा में जटिल प्रश्नों को सुगमता से हल करने में सक्षम बनाना

CURRENT AFFAIRS Programme
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के समसामयिक घटनाक्रमों का विस्तृत कवरेज
- फैकल्टी द्वारा समसामयिक घटनाक्रमों का विषयवार डिस्कशन

PCS COURSES
- UPPCS फाउंडेशन कोर्स
- BPSC फाउंडेशन कोर्स
- MPPCS फाउंडेशन कोर्स
- RAS फाउंडेशन कोर्स
- UP-RO/ARO

Mode of Courses
- Hybrid Course — Offline Classroom & Online Live Stream
- Offline Classroom
- Online Live Stream — 3 साल तक Mobile App पर वीडियो लैक्चर देखने की सुविधा

हेड ऑफिस: 636, भू-तल, डॉ. मुख़र्जी नगर, दिल्ली-110009
प्रयागराज केंद्र: महाराणा प्रताप चौराहा, स्टैनली रोड, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उ.प्र.

sanskritiias.com
Follows us: YouTube